पोवारी भाषा का परिचय
ऋषि बिसेन

पोवारी भाषा का परिचय

लेखक

ऋषि बिसेन

प्रस्तावना

आज विश्व में लगभग सात हजार भाषाएँ अस्तित्व में हैं जिसमें से नब्बे प्रतिशत से अधिक भाषाएँ ऐसी है जिनको बोलने लोग एक लाख से भी कम हैं। लगभग दो सौ से भी कम भाषाएँ ही ऐसी हैं जिनको बोलने वाले दस लाख से अधिक हैं। भाषाओं पर समय समय में अध्ययन होता रहा है और इस आधार पर भाषाओं के संरक्षण और संवर्धन के लिए नीतियाँ बनाई जाती हैं। युनेस्को जैसी अंतराष्ट्रीय संस्थाओं के साथ में विभिन्न सरकारी और गैर सरकारी संगठन विलुप्त हो रही भाषाओं के संरक्षण के कार्य में लगे हुए हैं।

मध्यभारत में पोवारी भी एक ऐसी भाषा है जिस पर विलुप्तता का खतरा है और इसके संरक्षण के लिये प्रयास भी जारी है। हालांकि यह भाषा पोवार समुदाय के द्वारा ही बोले जाने के कारण इसे सामुदायिक भाषा की श्रेणी में रखा गया है। वैसे तो पोवार समाज की जनसंख्या बारह से पंद्रह लाख के बीच में है पर पिछले कुछ वर्षों से पोवार समाज में इसे बोलने वाले लोगों की संख्या में निरंतर कमी आ रही है और यह चिंता का विषय है। सन २०११ की जनगणना में लगभग चार लाख लोगों ने अपनी मातृभाषा का नाम पोवारी बताया था। अभी भी यह भाषा दुनिया की उन दस प्रतिशत बोले जानी वाली भाषाओं में सम्मिलित है जिनको बोलने वालों की संख्या एक लाख से अधिक है। यह छत्तीस कुल पोवार समाज की ही अपनी सामुदायिक भाषा होने के बावजूद भी समाज की कुल जनसंख्या के मुकाबले यह संख्या काफ़ी

कम हैं जिसे उचित प्रचार-प्रसार के माध्यम से बढ़ाया जा सकता है। भाषाई अध्ययनकर्ताओं ने विश्व की भाषाओं को कई भाषाई परिवारों के रूप में वर्गीकृत किया है। पोवारी भाषा को इंडो- यूरोपियन परिवार में हिंदी की उपभाषा के रूप में सम्मिलित किया गया है।

भारत में पोवारी भाषा मुख्य रूप से मध्यप्रदेश के बालाघाट और सिवनी तथा महाराष्ट्र के गोंदिया और भंडारा जिलों में निवासरत पोवार (छत्तीस कुल पंवार) समाज के लोगों के द्वारा ही बोली जाती है। इसका कारण यह है की यह समाज अठारहवीं सदी की शुरुवात के आसपास वर्तमान महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र में एक सैन्य जत्थे के रूप में आये थे और इधर ही स्थाई रूप से बस गये। तत्कालीन मालवा राजपुताना क्षेत्र उनका मूल निवास स्थान था और उस क्षेत्र की उनकी भाषा के साथ विदर्भ की स्थानीय भाषाओं के समन्वय से एक विशिष्ट भाषा स्वरूप बन गया इसीलिए अब यह भाषा पोवार समुदाय की ही अपनी भाषा है जो उनकी विशिष्ट सांस्कृतिक सामाजिक धरोहर भी है और जिसके संरक्षण के प्रयास जारी है।

"पोवारी भाषा का परिचय" किताब का उद्देश्य पोवारी भाषा के मूल अस्तित्व की खोज के साथ इसकी वास्तविक पहचान को भी जानना है। यह एक शोध ग्रन्थ हैं और इसके लिये पोवारी भाषा पर विभिन्न स्रोतों से उपलब्ध तथ्यों के संग्रहण के साथ पोवारी भाषा का अवलोकन तथा उसका विश्लेषण करने का एक प्रयास किया है। इसके लिये उपलब्ध जनगणना दस्तावेज, राष्ट्रीय भाषा सर्वेक्षण, ज़िला गैज़ेट्स, शासकीय प्रतिवेदन तथा विभिन्न

ऐतिहासिक और सामाजिक किताबों में उपलब्ध पोवारी भाषा पर जानकारी को लिया गया है। किताब में ही क्रमबद्ध लेखन के साथ सन्दर्भ या स्रोत को भी साथ-साथ में लिखा गया है, जिससे पाठक इनकी प्रमाणिकता के साथ पोवारी भाषा के विभिन्न पहलुओं को समझ सकते हैं। भाषा के इतिहास के साथ इसके ऐतिहासिक और साहित्यिक नाम तथा उसकी वास्तविक पहचान को सामने लाने की कोशिश की है।

वर्तमान में पोवारी भाषा पर काफी साहित्य लिखा जा रहा है जो इसकी उन्नति और प्रचार-प्रसार में एक मील का पत्थर साबित होगा। इस पुस्तक के अंतिम भाग में पोवारी भाषा के कुछ साहित्यकारों के द्वारा रचित उनकी साहित्यिक रचनाओं को सम्मिलित कर पोवारी भाषा में ज्ञात रचित किताबों का विवरण भी दिया है। आशा करता हूँ की इस पुस्तक के माध्यम से पाठक पोवारी भाषा से परिचित हो सकेंगे।

आपका

ऋषि बिसेन (IRS), नागपुर

मूल निवास : ग्राम-खामघाट,

तहसील: लालबर्रा, जिला बालाघाट

जन्म स्थान : खोलवा, तहसील : बैहर, जिला बालाघाट

अनुक्रमणिका

१५.इंटरनेशनल इनसाक्लोपीडिया ऑफ़ लिंग्विस्टिक,

१६.एंथ्रोपोलॉजिकल लिंगविस्टिक वॉल्यूम ७, १९७८,

१७.लैंग्वेज हैंडबुक, मध्यप्रदेश सेन्सस, १९५१, छिंदवाड़ा, बैतूल, होशंगाबाद, निमाड़ एंड बालाघाट डिस्ट्रिक्स,

१८.लैंग्वेज हैंडबुक, मध्यप्रदेश सेन्सस, १९५१, नागपुर,चांदा, भंडारा एंड अमरावती डिस्ट्रिक्स,

१९.अक्सेस्सिओन्स लिस्ट , इंडिया, वॉल्यूम १८,बाय लाइब्रेरी ऑफ़ कांग्रेस ऑफिस, नई दिल्ली, १९८०,

२०.यल. सी. क्लासिफिकेशन : एडिशन्स एंड चैंजेस(१९९६),

२१.लैंग्वेज हैंडबुक ऑन मदर टाँग इन सेन्सस, १९७२ (१९७१ की जनगणना),

२२.सेंट्रल प्रॉविन्सेस डिस्ट्रिक्ट गज़ेटियर, भंडारा

२३.कैटेलॉग ऑफ़ लैंग्वेज एंड फैमिलीज़,

२४.मल्टी ट्री,

२५.एथनोलॉग : द लैंग्वेज ऑफ़ वर्ल्ड,

२६.इतिहासकार श्री ओ सी पटले जी और उनका पोवारी भाषा पर मौलिक अध्ययन,

२७.पोवार : श्री महेंन पटले

२८.पोवारी भाषा पर शोधकार्य,

----

१. पोवारी भाषा का परिचय

१.१ पोवारी, पोवारों को भाषा

पोवारी, पोवार(छत्तीस कुल पंवार) समाज की अपनी भाषा है। पोवार मालवा से विदर्भ क्षेत्र में आये थे। उनकी मालवा राजपुताना की बोली भाषा और स्थानीय मराठी के प्रभाव से आज के स्वरूप वाली पोवारी बोली का विकास हुआ। पोवारी बोली मुलत: मालवी राजस्थानी बोलियों का सम्मिश्रण हैं और उस पर मराठी का प्रभाव इस बात को दर्शाता हैं की लम्बे समय तक ३६ कुल के पंवार एक साथ नागपुर नगरधन में रहे और उसके बाद वैनगंगा क्षेत्र में विस्तारित हुए।

१.२ मालवा से पोवारों का मध्य भारत आगमन

बुलंद बख्त के शासन काल में मालवा सहित उत्तर भारत से अनेक सैन्य योद्धा नगरधन और नागपुर के आसपास बस चुके थे। भाटों की पोथियों में इनके इतिहास का उल्लेख मिलता है और उससे इनके मूल गांव का भी पता चलता है। उन्होंने इनकी वंशावली उनके मूल स्थान से नगरधन आने के बाद की वंशावलियाँ लिखीं है। पोवारों के भाट मालवा से ही थे और उनके साथ इधर आ गये थे। मुख्य भाट के वंशज स्व. बाबूलाल जी ने वैनगंगा क्षेत्र में बसे पोवारों की वंशावलियाँ लिखी हैं। जिसमे नगरधन और नागपुर का उल्लेख किया हैं।

ब्रिटिश काल के गैज़ेटिएर और जनगणना संबंधित दस्तावेजों में भी यही तथ्य उल्लिखित हैं की मालवा से प्रमार राजपूत सर्वप्रथम नगरधन में

आये थे और वहां उन्होंने एक किले का निर्माण किया। वैसे तो नगरधन का इतिहास बहुत ही प्राचीन हैं और वास्तव में यह नगर विदर्भ क्षेत्र की राजधानी थी। यह नगरी कई राजवंशों की राजधानी रही है जो बारहवीं सदी के अंत तक मालवा के पंवार राजाओं के अधीन रही थी। बुलंद बख्त ने सन १७०० के आसपास इस क़िले को मालवा राजपुताना से आये क्षत्रियों को सर्वप्रथम नगरधन क़िले में ही बसाया था। बाद में मराठा काल तक सैन्य सहयोग के लिए उत्तर भारत से राजपूतों का सपरिवार आगमन होता रहा। १७०० से १७५० के आसपास तक अनेक कुल अपने परिवार के साथ इन क्षेत्रों में रहे थे। और सम्भवतया यही वह कालक्रम था जब मालवा परमार के ३६ क्षत्रियों कुलों का संघ ने मध्य भारत में भी अपने छत्तीस कुल के अस्तित्व को बनाये रखा।

१.३ पोवारी भाषा की वर्तमान स्थिति

वैनगंगा क्षेत्र में पोवार/पंवार समाज की बोली पोवारी हैं पर अब पोवारी आज गांवों में ही सीमित रह गयी हैं। शिक्षित वर्ग अब हिंदी/मराठी/अंग्रेजी ही सामान्यतया प्रयोग करते हैं और पोवारी बोली धीरे-धीरे सीमित हो रही हैं। बालाघाट/सिवनी/गोंदिया/भंडारा जिलों के पंवार/पोवार समाज की मातृभाषा पोवारी ही है और आज से लगभग 25 वर्ष के पूर्व सभी पोवारी में ही आपस में बात किया करते थे पर अब बहुत बदलाव आ गया है। बालाघाट और सिवनी में पोवारी बोलने वालों की संख्या तेजी से कम हो रही है तथा भंडारा और गोंदिया में भी पोवारी का

प्रयोग अब कम हो रहा है। शुद्ध पोवारी जो हमारे बुजुर्ग ही बोला करते थे, अब कुछ कम ही सुनने को मिलती है।

पोवारी हमारे पुरखों की सामान्य बोलचाल की भाषा रही हैं पर इसमें साहित्य का सृजन बहुत ही कम हुआ हैं। हाल के वर्षों में पोवारी पर काफी लेखन कार्य हुआ हैं। लेकिन हिंदी और मराठी साहित्य की तरह विभिन्न विधाओं में पोवारी पर काफी कम लिखा गया हैं। आज पचास से भी ज्यादा लेखक पोवारी लेखन का कार्य कर रहे हैं और अब निश्चित ही विभिन्न विधाओं पर पोवारी बोली में साहित्य सृजन होता है तो यह बोली और अधिक समृद्धशाली होगी।

२

भारत की जनगणना दस्तावेज, भाषाई सर्वेक्षण, प्रतिवेदन और विभिन्न किताबों में पोवारी भाषा का उल्लेख

२.

भारत की जनगणना दस्तावेज, भाषाई सर्वेक्षण, प्रतिवेदन और विभिन्न किताबों में पोवारी भाषा का उल्लेख

रिपोर्ट ऑन द टेरिटरीज ऑफ़ द राजा ऑफ़ नागपुर, बाय आर. जेंकिन्स, १८२७ में प्रकाशित हुई थी। इस रिपोर्ट में पोवारों के द्वारा हिंदी बोले जाने का उल्लेख है। नागपुर राज्य पर ब्रिटिश आधिपत्य के बाद उन्होंने इस क्षेत्र के निवासियों के इतिहास और भाषा के अध्ययन की यह एक शुरुवात भर थी। इसके बाद में नियमित जनगणना के समय के विस्तृत अध्ययनों में हिंदी की उपभाषा के रूप में पोवारों की भाषा, पोवारी दर्शाई गई थी।

सन १८६६ में सेंट्रल प्रॉविन्सेस एथनोलॉजिकल कमिटी, की रिपोर्ट को जनगणना की शुरुवात मानी जाती है। इसके बाद ब्रिटिश भारत में प्रथम विधिवत जनगणना १८७२ से शुरू हुई। सन १८८१ से हर दस वर्ष में राष्ट्रीय स्तर पर जनगणना की शुरूवात हुई और १८८१ से लेकर २०११ तक सभी जनगणनाओं में पोवारी(Powari) भाषा का विस्तृत विवरण दिया गया है। इसके अतिरिक्त ब्रिटिश काल से लेकर स्वतंत्र भारत की सभी भाषाई गणना में पोवारी भाषा या बोली नाम से इसके स्वतंत्र अस्तित्व का उल्लेख मिल जाता है।

सन १८९४ से १९२८ के मध्य में जॉर्ज. ए. ग्रियर्सन के द्वारा भारत में प्रथम राष्ट्रीय स्तर का भाषाई सर्वेक्षण हुआ जिसमें पोवारी बोली भाषा

का विस्तृत उल्लेख मिलता है। इसी प्रकार शासन के विभिन्न प्रतिवेदन तथा अन्य भाषा वैज्ञानिकों के अध्ययन में भी पोवारी भाषा का उल्लेख मिलता है। चूंकि यह भाषा एक सामुदायिक भाषा है अतः पोवार समाज के सामाजिक विचारकों एवं इतिहासकारों के द्वारा भी समाज पर लिखे अपने लेखों में पोवारी भाषा का विस्तृत अध्ययन और उल्लेख किया है। पोवारी भाषा पर समय-समय पर विभिन्न शोधकर्ताओं के द्वारा शोधकार्य भी हुए है। कई संस्थाएं, सामाजिक चिंतक, साहित्यकार और शोधकर्ता पोवारी भाषा के संरक्षण और संवर्धन का निरंतर कार्य कर रहे है। अनेक सामाजिक माध्यमों के द्वारा पोवारी भाषा को बचाने के निरंतर प्रयास जारी है।

१. सेंट्रल प्रॉविन्सेस एथनोलॉजिकल कमिटी, की रिपोर्ट

सेंट्रल प्रॉविन्सेस एथनोलॉजिकल कमिटी, १८६६-६७ की रिपोर्ट के पृष्ठ क्रमांक ५१ में लिखा है की पोवारी भाषा, पोवारों की भाषा है पर स्थानीय भाषाएँ जैसे मराठी और गोंडी के शब्द भी इसमें समाहित हो गए है। लम्बे समय तक विभिन्न भाषी समूहों के साथ-साथ रहने पर उनमें अनेक शब्दों का आदान-प्रदान होना स्वाभाविक प्रक्रिया है। इसलिए पोवारी भाषा में विदर्भ क्षेत्र में आने के बाद स्थानीय भाषाओं के प्रभाव के कारण यह भाषा अपने पूर्ववर्ती क्षेत्र की भाषाएँ जैसे मालवी, निमाड़ी और गुजराती से कुछ अलग स्वरूप में विकसित हुई और एक स्वतंत्र भाषा बन चुकी है जो सिर्फ

बालाघाट, गोंदिया, भंडारा और सिवनी जिलों में स्थाई रूप से निवासरत पोवार समुदाय की ही भाषा है।

----

२. सेंट्रल प्रॉविन्सेस सेन्सस, १८७२

सेंट्रल प्रॉविन्सेस सेन्सस, १८७२ के पृष्ट क्रमांक ३८ में लिखा है की बालाघाट, भंडारा और सिवनी जिलों में ९२,९५३ पोंवार समाज की जनसंख्या थी। संभवतया इस समय समाज के सभी लोग पोवारी बोलते थे इसलिए १८७२ में पोवारी बोलने वालों की जनसंख्या ९२,९५३ थी। इसी प्रकार १८८१ में, १८९१ में, १९०१ में, १९११ में पोवारों की मातृभाषा पोवारी होने का ही उल्लेख किया गया है। पोवारी, सिर्फ छत्तीस कुल वाले वैनगंगा क्षेत्र के पोवार(पंवार) समाज के द्वारा ही बोली जाती है इसीलिए जितनी इस समाज की जनसंख्या होगी उतने ही लोग पोवारी भाषी होंगे।

Ponwars 92,953.

Bhandara 45,404.
Seoni 30,305.
Balaghat 18,906.

71. The Ponwars trace their origin to the Rajput class of the same name (Pramaras) who were settled in Malwa, but their first appearence in these parts dates from not much more than a century ago, when they settled at Nandardhan near Ramtek in the Nagpur district. Here they erected a fort and located themselves in numerous villages, and as time went on they extended themselves over Ambagarh and Chandpur, east of the Wainganga. Some of the members of this caste accompanied Chimaji Bhonsla in the Cuttack expedition, and on their return received as a reward for their services lands in Lanji and other tracts to the west of the Wainganga in the Balaghat district. In the Seoni district the Ponwars came first to Sangarhi and Partapgarh, and ultimately into Katangi, recently transferred from Seoni to Balaghat. The Ponwars are an agricultural class, chiefly growing rice, and are a very enterprising race. It is chiefly through them and the Lodhis that the work of colonising the Balaghat district is going on.

हालाँकि समय के साथ समाज में लोग अब बोलचाल के लिए पोवारी के साथ हिंदी या मराठी का प्रयोग अधिक करने लगे हैं जिससे धीरे धीरे नई पीढ़ी अपनी मातृभाषा पोवारी से दूर हो रहे हैं जिसे रोकने की आवश्यकता है।

१८७२ की जनगणना इस रिपोर्ट के अनुसार नगरधन से समय के साथ पंवार, वैनगंगा के पूर्व में आम्बागढ़ और चांदपुर की ओर विस्तारित हुए। कुछ पोवारों ने कटक पर मराठों के विजय अभियान में श्री चिमाजी भोसले का साथ दिया था। कटक अभियान में पोवारों के सौर्य और पराक्रम के कारण पुरस्कार स्वरूप उन्हें लांजी और बालाघाट जिलें में वैनगंगा के पश्चिम में बहुत सी भूमि उन्हें प्रदान की गयी। सिवनी जिलें में पंवार सर्वप्रथम सांगड़ी और प्रतापगढ़ में आये। इसके बाद उनका विस्तार बालाघाट जिलें में कटंगी की ओर हुआ। इस जनगणना रिपोर्ट में उन्हें बहुत ही उद्यमी जाति और उन्नत कृषक कहा गया है। इस जनगणना में भंडारा में ४५,४०४, सिवनी में ३०,३०५ और बालाघाट जिलें में १३,९०६ पोवारों की जनसंख्या बताई गयी है।

----

३. १८८१ की जनगणना

१८८१ की जनगणना में सेंट्रल प्रॉविन्सेस प्रान्त में पोवारी भाषी पोवार समाज की कुल जनसंख्या १,०६,०८१ थी जो मुख्य रूप से भंडारा

(बालाघाट और गोंदिया शामिल) और सिवनी जिलों में निवासरत थे। भारत की जनगणना, १८९१ में यह तथ्य भी उल्लिखित हुआ था की पोवारी, हिंदी परिवार की बोली है। कई बोलियाँ जैसे भोयरी, गोवारी, कटियाई, पोवारी आदि बोलियाँ का नाम उनको बोले जाने वाली जाति विशेष के नाम पर आधारित है। इसी पृष्ठ पर आगे लिखा है की ये जातियां स्थाई निवासियों के संपर्क में आई और उन पर उनकी भाषाओं का प्रभाव भी पड़ा। जैसे भंडारा जिले की पोवारी।

----

४ . सेंट्रल प्रॉविनवेस डिस्ट्रिक्ट गैज़ेटिएर, जिला सिवनी

सेंट्रल प्रॉविनवेस डिस्ट्रिक्ट गैज़ेटिएर, जिला सिवनी, १९०७ के पृष्ठ क्रमांक ४५ में लिखा है की इस समय सिवनी जिले में १७,००० पोवार थे जो अपनी भाषा, पोवारी(पूर्वी हिंदी) बोलते थे। समाज की इस भाषा पोवारी में समय के साथ मराठी का भी प्रभाव पड़ा। १७०० के आसपास और उसके बाद मराठा समय तक राजपुताना-मालवा से बड़ी संख्या में कई कुल के क्षत्रियों का आगमन हुआ था और वे सर्वप्रथम नगरधन में आकर बसे थे। सम्भवतया १७५० तक उनके अनेक परिवार, नगरधन और वैनगंगा क्षेत्र में आकर एक साथ रहे थे और मराठी भाषियों के साथ लम्बे समय तक रहने के कारण, मूल पोवारी बोली पर मराठी का प्रभाव आज भी नजर आता है।

----

५. भाषाविद श्री जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन भाषा सर्वेक्षण

आयरिश अधिकारी और भाषाविद श्री जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन के द्वारा भारत में भाषा सर्वेक्षण किया गया था। "लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ़ इंडिया" नाम से कई भागों में उन्होंने अपनी भाषा अध्ययन रिपोर्ट तैयार की थी। इस सर्वेक्षण की छटवी रिपोर्ट के पृष्ठ क्रमांक १७८ से १७९ में वैनगंगा क्षेत्र के पोवार(पंवार) के द्वारा बोली जाने वाली बोली, पोवारी के विषय में लिखा गया है।

श्री ग्रियर्सन ने अपनी रिपोर्ट में लिखा है की पोवारी, पोवारों की भाषा हैं जो मुलत: मालवा के राजपूत प्रमार हैं। वे उत्तर भारत की ओर विस्थापित हुये और बाद के समय में वैनगंगा की घाटियों में उन्होंने अपनी सघन बस्तियां बसाई। इस जाति का परम्परागत घर मध्य भारत का धार हैं। जैसा की हम सभी जानते हैं की मालवा नरेश भोजदेव ने अपनी राजधानी उज्जैन से धार स्थान्तरित की थी और तब से लेकर आज तक प्रमार वंशियो का इस नगरी पर शासन और प्रभाव रहा हैं। हालांकि पोवार पुरे मध्य प्रान्त में फैले हैं पर बालाघाट और आसपास के क्षेत्रों में इनके द्वारा अलग ही बोली, पोवारी बोली जाती है।

सन १८९१ की जनगणना में बालाघाट और भंडारा जिलों में पोवार समाज की जनसंख्या १,१३,६०४/- थी। पश्चिमी राजपुताना से आने के बाद पोवारों की भाषा पर बघेली और मराठी का प्रभाव देखा गया हैं। उन्होंने अपनी रिपोर्ट में बालाघाट और भंडारा जिलों में बोली जाने वाली पोवारी का तुलनात्त्मक विश्लेषण भी दिया हैं।

६. सेंट्रल प्रॉविन्सेस डिस्ट्रिक्ट, गज़ेटियर्स, बालाघाट

सेंट्रल प्रॉविन्सेस डिस्ट्रिक्ट, गज़ेटियर्स, बालाघाट डिस्ट्रिक्ट (१८९१-१९०१) के पृष्ठ क्रमांक १३ पर पोवार समाज की बोली पोवार और पोवारी बोलने वालों की संख्या ४१,०४५/- दर्शायी गयी है।

----

७. सेन्सस ऑफ़ इंडिया, १८९१

सेन्सस ऑफ़ इंडिया, १८९१ वॉल्यूम XI, द सेंट्रल प्रॉविन्सेस एंड फिउडातोरियस, पार्ट-I, द रिपोर्ट में पृष्ठ क्रमांक १३६ पर पोवार समाज की बोली पोवारी को उनके मूल स्थान, पश्चिमी राजस्थान को बोली बताया है और लिखा है की इस क्षेत्र में आने के बाद इस पर मराठी का प्रभाव पड़ा। लम्बे समय तक मराठी भाषीय जनसंख्या के साथ रहने से उसका प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है।

----

८. १९०१ की जनगणना दस्तावेज

१९०१ की जनगणना दस्तावेज सेन्सस ऑफ़ इंडिया, १९०१, वॉल्यूम XIII: सेंट्रल प्रॉविन्सेस, पार्ट I: रिपोर्ट, के पृष्ट क्रमांक-६० में लिखा है की पोवारी बोली सिवनी, भंडारा एवं बालाघाट जिलों में बोली जाती है। पोवारों का वास्तविक घर पश्चिमी राजपुताना है और उनकी बोली पर बघेली

और मराठी का प्रभाव दिखता है। इस दस्तावेज में लिखा है की इन क्षेत्रों में पोवारों का आगमन पश्चिमी राजपुताना से बघेली बोली बोले जाने वाले क्षेत्रों से हुआ होगा और शायद इसी लिए पोवारी बोली पर बघेली का प्रभाव पड़ा होगा।

----

९. भारत की जनगणना,१९११

भारत की जनगणना,१९११ में पोंवारी भाषा(पूर्वी हिंदी) बोलने वालों की जनसंख्या १,४३,००३ हो गई थी। सेन्सस ऑफ इंडिया, १९११ वोल्युम १०, के पृष्ठ क्रमांक १८८ में पोवारी बोली बोले जाने वालों की कुल संख्या १,४३,००३ दर्शाई गई है।

----

१०. सेंट्रल प्रॉविन्सेस डिस्ट्रिक्ट ग़ज़ीटियर्स, १९२७

सेंट्रल प्रॉविन्सेस डिस्ट्रिक्ट ग़ज़ीटियर्स, वॉल्यूम ३, पार्ट २, १९२७ के पृष्ठ क्रमांक १४, में लिखा है की पोवारी, पोवारों की उपबोली है।

----

११. एक्सेशन लिस्ट, इंडिया, वॉल्यूम १८, १९८०

एक्सेशन लिस्ट, इंडिया, वॉल्यूम १८, १९८० किताब के पृष्ठ क्रमांक ४०३ में पोवारी भाषा के विषय में लिखा गया है की यह राजस्थानी, बघेली और मराठी भाषाओं का मिश्रण है, जो महाराष्ट्र के भंडारा जिला में और

मध्यप्रदेश के बालाघाट जिलों में बोली जाती हैं। इस समय सिवनी जिला का स्वतंत्र अस्तित्व था और उसमें निवासरत पंवार समाज के लोगो के द्वारा भी पोवारी भाषा बोली जाती है जिसका उल्लेख करना लेखक भूल गए। सन १९९९ में भंडारा से पृथक कर गोंदिया जिला बनाया गया जहां पर बहुत बड़ी संख्या में पोवारी भाषा बोलने वाले पोवार समुदाय के लोग रहते हैं।

----

१२. केंद्रीय हिंदी संस्थान(१९८९)

केंद्रीय हिंदी संस्थान के द्वारा सन १९८९ जारी किताब कोश विज्ञान सिद्धांत एवं मूल्याङ्कन के पृष्ठ क्रमांक ३४ में भाषाओं का वर्गीकरण किया दिया गया है। उन्होंने क्षेत्रीय बोलियाँ और सामाजिक बोलियों में विभाजित किया है। वरहाड़ी, अहिरानी, कोंकनी, डांगी आदि क्षेत्रीय बोलियों के उदाहरण है जबकि पोवारी, कोष्ठी, कोली, खत्री, चिटपवनी आदि को समाज विशेष से जुड़े रहने के कारण सामाजिक भाषा नाम से वर्गीकृत किया है।

----

१३. सेंट्रल प्रॉविन्सेस डिस्ट्रिक्ट गज़ेटीरस, भंडारा डिस्ट्रिक्ट

सेंट्रल प्रॉविन्सेस डिस्ट्रिक्ट गज़ेटीरस, भंडारा डिस्ट्रिक्ट, बी वॉल्यूम स्टैटिस्टिकल टेबल्स १८९१-१९२६ के पृष्ठ क्रमांक १५ के टेबल ५ में यह तथ्य उल्लिखित है की पोवारी, पोवारों की बोली है। इस गैज़ेट में भंडारा जिले में पोवार समाज की जनसंख्या और अन्य विवरण दिए गए हैं।

----

१४ .नागपुर यूनिवर्सिटी जर्नल ह्यूमेनिटीज़ वॉल्यूम २२

नागपुर विश्वविद्यालय के भाषा विभाग के प्राध्यापक डा. एस. बी. कुलकर्णी जी ने सर्वप्रथम पोवारी भाषा का विस्तृत अध्ययन कर, "पोवारी बोली" नामक एक पुस्तक भी लिखी हैं। उनका यह शोध नागपुर विश्विद्यालय के द्वारा सन १९७१ में प्रकाशित, नागपुर यूनिवर्सिटी जर्नल ह्यूमेनिटीज़ वॉल्यूम,२२ में दिया गया हैं। इस जर्नल में मराठी भाषा और अन्य बोलियों के साथ पोवारी बोली का भी अध्ययन किया गया हैं। उन्होंने लिखा है की पोवारी बोली भंडारा और बालाघाट जिलों के पोवारों के द्वारा बोली जाती है।

----

१५. इंटरनेशनल इनसाक्लोपीडिया ऑफ़ लिंग्विस्टिक

इंटरनेशनल इनसाक्लोपीडिया ऑफ़ लिंग्विस्टिक के पृष्ठ क्रमांक २९१ में पोवारी को बघेली बोली के समूह में सम्मिलित किया हैं जबकि इसी पुस्तक के पृष्ठ क्रमांक ४७७ में उल्लिखित है की पोवारी बुंदेली की उपबोली हैं। इसी प्रकार से कई भाषाविदों ने भी पोवारी बोली को बघेली और बुंदेली की उपभाषा के रूप में रखा हैं। लेकिन पोवारी बोली की इन बोलियों से कोई साम्यता नहीं हैं और इसकी अधिक साम्यता मालवी, राजस्थानी तथा गुजराती से ही हैं साथ ही नगरधन-नागपुर क्षेत्र में आने के बाद मराठी का इस बोली पर काफी प्रभाव पड़ा हैं। वास्तव में आज की पोवारी बोली का स्वरूप

१७०० से १७७५ के मध्य इस क्षेत्र में ही विकसित हुआ और इस बोली का अपना स्वतंत्र अस्तित्व हैं।

----

१६. एंथ्रोपोलॉजिकल लिंगविस्टिक वॉल्यूम ७, १९७८

एंथ्रोपोलॉजिकल लिंगविस्टिक वॉल्यूम ७, १९७८ के पृष्ठ क्रमांक २६८ में उल्लिखित है कि १९५१ की जनगणना में बालाघाट जिले के ३५,९७९ लोगों ने पोवारी को अपनी प्रथम बोली बताया था। बालाघाट जिले में पोवार(पंवार) समाज की कुल जनसंख्या की तुलना में यह संख्या इसीलिए कम रही होगी क्योंकि उन्होंने हिंदी को अपनी मातृभाषा बताया होगा।

----

१७. लैंग्वेज हैंडबुक, मध्यप्रदेश सेन्सस, १९५१, छिंदवाड़ा, बैतूल, होशंगाबाद, निमाड़ एंड बालाघाट डिस्ट्रिक्स

देश की स्वतंत्रता के बाद १९५१ में पहली बार पूर्ण रूप स्वतंत्र भारतवर्ष की जनगणना हुई थी। इस जनगणना के साथ भाषाई सर्वेक्षण भी हुआ था और जिलेवार रिपोर्ट्स प्रकाशित हुयी थी। लैंग्वेज हैंडबुक, मध्यप्रदेश सेन्सस, १९५१, छिंदवाड़ा, बैतूल, होशंगाबाद, निमाड़ एंड बालाघाट डिस्ट्रिक्स के पृष्ठ क्रमांक ३१ में सिवनी क्षेत्र में पोवारी बोली

जाने का विवरण दिया है। इस रिपोर्ट्स के पृष्ठ क्रमांक १३४, १३५ और १३६ में बालाघाट जिले में ग्रामवार पोवारी बोले जाने का विवरण दिया हैं।

----

१८. लैंग्वेज हैंडबुक, मध्यप्रदेश सेन्सस, १९५१, नागपुर,चांदा, भंडारा एंड अमरावती डिस्ट्रिक्स

लैंग्वेज हैंडबुक, मध्यप्रदेश सेन्सस, १९५१, नागपुर,चांदा, भंडारा एंड अमरावती डिस्ट्रिक्स के पृष्ठ क्रमांक १०२, ११५, ११६ आदि में भंडारा जिले में पोवार समाज के द्वारा बोले जाने वाली पोवारी बोली का ग्रामवार विवरण दिया गया हैं।

----

१९. अक्सेस्सिओन्स लिस्ट , इंडिया , वॉल्यूम 18 बाय लाइब्रेरी ऑफ़ कांग्रेस ऑफिस, नई दिल्ली, १९८०

Rs15.00

On the Powari dialect, an admixture of Rajasthani, Bagheli, and Marathi, spoken in the Bhandara District of Maharashtra and the Balghat District of Madhya Pradesh; a study.

२०. यल. सी. क्लासिफिकेशन : एडिशन्स एंड चैंजेस(1996)

PAGE 87

Old Georgian language: PK9105.5
Powari (Hindī dialect): PK1970.P68
Sinagoro (Melanesian language): PL6305
*Tirhutia (Bihārī dialect): ...
(Cancel line.)
Una (Malayan language): PL5488.63
Wagdi (Marwari dialect): PK2469.W34

इस पुस्तक के पृष्ठ क्रमांक ८७ में पोवारी को हिंदी की उपबोली बताया गया है।

----

२१. लैंग्वेज हैंडबुक ऑन मदर टाँग इन सेन्सस, १९७२ (१९७१ की जनगणना)

१९७१ की जनगणना पर आधारित, पुस्तक लैंग्वेज हैंडबुक ऑन मदर टाँग इन सेन्सस, १९७२ में श्री रमेश चंद्र निगम ने पृष्ठ क्रमांक २०६ में पोवारी बोली का उल्लेख किया है और इस बोली को बोले जाने वाले वालों की संख्या ६४,०७८ बताई है। यह संख्या भी पूरी तरह से पोवारी बोली बोले जाने वाले समूह को नहीं दर्शाती क्योंकि इस समय इससे कहीं अधिक संख्या में जनसमुदाय पोवारी बोली बोलते थे।

----

२२. सेंट्रल प्रॉविन्सेस डिस्ट्रिक्ट गज़ेटियर, भंडारा

सेंट्रल प्रॉविन्सेस डिस्ट्रिक्ट गज़ेटियर, भंडारा जिला में यह तथ्य उल्लिखित हैं की पोवार समाज की बोली पोवारी हैं और इस बोली के इन्होंने अपने मूल स्थान, पश्चिमी राजपूताना से लेकर आये थे।

----

२३. कैटेलॉग ऑफ़ लैंग्वेज एंड फैमिलीज़

ग्लूटोलॉग & जॉर्ज अ. ग्रियर्सन, १९०४ में यह तथ्य उल्लिखित हैं की पोवारी, इंडो आर्यन सेंट्रल ज़ोन की उपभाषा, ईस्टर्न हिंदी की उपभाषा हैं।

----

२४. मल्टी ट्री

बोली भाषा का अध्ययन करने वाली संस्था मल्टी ट्री, में पोवारी बोली को pwr, कोड : ISO ६३९-३, इंडो-यूरोपियन फैमिली दिया हैं।

----

२५. एथनोलॉग : द लैंग्वेज ऑफ़ वर्ल्ड

एथनोलॉग : द लैंग्वेज ऑफ़ वर्ल्ड में पोवारी बोली को वैनगंगा पोवारी [(VynegangaPowari) (pwr - vyn) से अभिलेखित किया गया हैं। **OLAC रिकॉर्ड** में भी पोवारी बोली को pwr कोड से अपने रिकॉर्ड में शामिल किया है।

२६. इतिहासकार श्री ओ सी पटले जी और उनका पोवारी भाषा पर मौलिक अध्ययन

श्री ओ सी पटले जी के द्वारा पोवारी भाषा पर एक किताब, "पोवारी भाषा संवर्धन: मौलिक सिद्धांत व व्यवहार" किताब में पोवारी के अध्ययन के लिए मौलिक सिद्धांतों का प्रतिपादन किया है। यह पोवारी भाषा पर शोधकर्ताओं को इस भाषा के वास्तविक स्वरूप और इतिहास को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण किताब है।

पोवारी भाषा संवर्धन:मौलिक सिध्दांत व व्यवहार

पोवारी भाषा संवर्धन : सिध्दांत व व्यवहार

इसके अतिरिक्त उनकी अन्य किताब "समाजोत्थान का सिद्धांत" और "पोवारों के इतिहास" में भी पोवारी भाषा के विषय में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है

अध्याय 5.
पोवारी भाषा संवर्धनः मौलिक सिद्धांत
(Powari Language Promotion: Basic Principles)

1. भाषा संवर्धन सिद्धांतों की आवश्यकता

पोवारी भाषा ला लोकप्रियता, प्रतिष्ठा एवं गौरव को दिशा मा आगे बढ़ावनो येवच पोवारी भाषा संवर्धन को अभिप्राय से. नवयुग मा भाषा संवर्धन साती औपचारिक व संगठित प्रयासों की आवश्यकता से. येन् प्रयासों ला उपयुक्त दिशा देन साती पोवारी भाषा संवर्धन का सिद्धांत प्रस्थापित करनो आवश्यक होतो. भविष्य मा ये सिद्धांत भाषा संवर्धन साती मार्गदर्शक तत्व (Directive Principles) साबित होयेती.

2. भाषा संवर्धन का सिद्धांत (Basic Principles)[1]

पोवारी भाषा संवर्धन का प्रमुख सिद्धांत निम्नलिखित सेती–

2–1. सामाजिक एकता को सिद्धांत
2–2. संस्कृति रक्षण को सिद्धांत
2–3. भाषिक अस्मिता को सिद्धांत
2–4. स्वतंत्र पहचान को सिद्धांत
2–5. आत्मियता को सिद्धांत
2–6. भाषिक निष्ठा को सिद्धांत
2–7. परिवर्तनशीलता को सिद्धांत
2–8. व्याकरणमुक्त लेखन को सिद्धांत
2–9. प्रमाण भाषा निर्मिति को सिद्धांत
2–10. राष्ट्रीय लिपि को सिद्धांत
2–11. भाषिक माधुर्य को सिद्धांत
2–12. लिखित साहित्य को सिद्धांत
2–13. उदारीकरण को सिद्धांत
2–14. सशक्तिकरण को सिद्धांत

3. सिद्धांतों की उत्पत्ति व उपयोगिता

उपर्युक्त भाषा संवर्धन का सिद्धांत, प्रस्तुत लेखक को मौलिक संशोधन (Original Research) की फलश्रुति आय. प्रस्तुत लेखक द्वारा इ. स. 2018 मा पोवार समाज मा नवी भाषिक क्रांति आनन को प्रयास करेव गयेव व क्रांति साकार करेव गयी, वोन् अनुभव पर अधिष्ठित सेती.

(1) गोंदिया जिला– 13,22,331.
(2) भंडारा जिला– 12,00,334.
(3) बालाघाट जिला– 17,01,156.
(4) सिवनी जिला– 13,79,131.

कूल जनसंख्या– 56,02,952.

उपर्युक्त चारों जिलों में पोवारों की आबादी के प्रतिशत के आधार पर यह कहा जा सकता है कि 2011 में पोवारों की जनसंख्या लगभग 11 लाख 20 हजार थी. वर्तमान में पोवारों की अनुमानित जनसंख्या 15 लाख है.

7. समाज की बोली और संस्कृति

पोवार समाज की एक स्वतंत्र बोली अथवा मातृभाषा है. इनकी मातृभाषा पोवारी (Powari) कहलाती है.

समुदाय के लोग भी इन्हें पोवार तथा इनकी भाषा को पोवारी नाम से ही संबोधित करते है.

जमिनी हकीकत, रेसिडेंट जेनकिन्स का कथन (1867), केंद्रीय प्रांत की जनगणना रिपोर्ट (1872), प्रथम भाषा विषयक सर्वेक्षण (1876), नृवंश विज्ञान प्रतिवेदन–नागपुर (1768), केंद्रीय प्रांत प्रशासनिक रिपोर्ट (1782–83), जनगणना रिपोर्ट (1881, 1891, 1901) एवं भंडारा जिला गॅजेटियर (1978) इन सभी दस्तावेजों की जानकारी में साम्यता है. इसलिए मालवा में थे तब और वहां से वैनगंगा क्षेत्र में आने के पश्चात भी पोवार जाति का पोवार यह एकही नाम प्रचलित था.

13. भाषा के नाम की कसौटी

सामान्यतः जाति के नाम के अनुसार ही उसकी मातृभाषा का नाम होता है. जाति का नाम पुल्लिंगी एवं भाषा का नामा स्त्रीलिंगी होता है.

यहां अध्ययन हेतु लिये गये समाज की मातृभाषा पोवारी है.मातृभाषा के नाम के आधार पर भी इस जाति का नाम "पोवार" होना सिद्ध होता है. जिस समाज की मातृभाषा और संस्कृति भी पोवारी कहलाती है, निःसंदेह उस समाज का नाम "पोवार" है. 1901 की जनगणना रिपोर्ट में पोवारी की लिए पंवारी यह पर्यायी नाम अकित किया गया हैं. लेकीन पोवारी यह पारंपारिक नाम सही हे. 2011 की जनगणना रिपोर्ट में "पोवारी" यह एकही नाम अंकित हैं.

२७. पोवार : श्री महेंन पटले

श्री महेंन पटले जी ने पोवारों की संस्कृति और इतिहास का विस्तृत अध्ययन अपनी किताब "पोवार" में दिया है। इस किताब में उन्होंने पृष्ठ क्रमांक ९३ पर उन्होंने पोवारी के बारे में लिखा है।

बोली -

मध्य भारतीय पोवारो की विशिष्ट भाषा है, जिसका नाम पोवारी है , लिखित साहित्य बहुत कम है और यह समुदाय द्वारा ही बोली जाने के कारण इस भाषा को बोली कहा जाता है ! **पोवारी बोली** मालवी , राजस्थानी , गुजराती ,पुराणी डिंगल /पिंगल, बुन्देली , बघेली , हिंदी का मिलाजुला स्वरुप है ! वैनगंगा नदी के क्षेत्र में बसे मालवा के प्रमारो

93

की भाषा पोवारी होने की बात भारत के पहले भाषा सर्वे के लेखक श्री गियर्सन लिखते है !

पोवारी बोली में "है" की बजाये "से" , "हु" के बजाये "सु" गुजराती भाषा से सामीप्य दर्शाता है ! तो भयौ , खायौ , पियौ , कर्‍यौ आदि क्रियापद राजस्थानी मालवी सबंध दर्शाते है !

पोवारी संस्कृत से उपजी यह तो स्पष्ट है ! उदाहरण के लिए संस्कृत शब्द मुहूर्त को मोहतुर कहा जाता है ! संस्कृत का एक वाक्य ***त्वं कीं करोषि*** को पोवारी में कहेंगे ***तुमि का करसेव*** ! हालाकि पोवारी पर डिंगल / पिंगल शैली , मालवी , ब्रज शैली का बहुत प्रभाव पाया गया है! समय के साथ हिंदी , उर्दू , अंग्रेजी , मराठी , स्थानीय भाषाओ का काफी प्रभाव पड़ा है ! कुछ शब्द तो पूरी तरह अलग है जो किसी भी भाषा से नही मिलते ! उदाहरण जैसे **चोह्यव नही** यानि दिखा नही !

पोवार पोवारी बोली में सामान्यतः "आमी पोवार आजन" कहते है !

२९. पोवारी भाषा पर शोधकार्य

पोवारी भाषा पर कई लोगों ने शोध कार्य भी किया है। नागपुर विश्वविद्यालय के प्राध्यापक श्री डी. एस. कुलकर्णी ने सर्वप्रथम पोवारी भाषा का विस्तृत अध्ययन कर, "पोवारी बोली" नामक एक पुस्तक भी लिखी हैं। स्व. मंजू अवस्थी ने पोवारी भाषा पर शोध कर डी.लिट. की उपाधि प्राप्त की थी। इसके अतिरिक्त श्रीमती भारती शरणागत और श्री तूफान सिंह पारधी ने भी पोवारी भाषा पर शोध किया हैं पर उन्होंने अपने शोध में पोवारी भाषा के ऐतिहासिक और साहित्यिक नाम को शोध के विषय में नही रख पाए और साथ पोवारी बोलने वालों के भौगोलिक क्षेत्र का भी सही सही आकलन भी नही कर पाए हैं। इसीलिए और अधिक तथ्यपरक शोध की आवश्यकता है।

आज कई सामाजिक चिंतक, साहित्यकार और इतिहासकार पोवारी भाषा के मूल और साहित्यिक नामों के साथ पोवारी भाषा के स्वतंत्र विकास और सही तथ्यों के साथ उसके इतिहास लेखन पर निरंतर कार्य कर रहे हैं। निश्चित ही धीरे-धीरे पोवारी का एक एक स्वतंत्र विकास होगा और इस पर आये विलुप्ति और इसके नाम बदलकर अन्य भाषाओं के साथ मिश्रित स्वरूप बनने से बचकर यह एक पूर्ण भाषा के रूप में अपने मूल अस्तित्व और पहचान के पोवार समुदाय की सामाजिक-सांस्कृतिक धरोहर के रूप में बनी रहेगी।

३. पोवारी भाषा का ऐतिहासिक तथा साहित्यिक नाम

भाषा की अपनी विशिष्ट पहचान के लिये उसका एक नाम होना जरुरी है। पोवारी बोलने वाले बुजुर्गों के द्वारा समाज का नाम पोवार और भाषा का नाम पोवारी ही कहा जाता था। वे लोग कहते हैं की, "आमी धारानगरी का पोवार आजन।" इसके साथ अधिकांश पुराने दस्तावेजों में भाषा का नाम पोवारी ही होना इस बात को सिद्ध करता है की भाषा का नाम पोवारी ही है। कुछ साहित्यकारों और शोधकर्ताओं ने सतही अध्ययन के आधार पर पोवारी को पवारी लिखा है जो ऐतिहासिक और साहित्यिक दृष्टिकोण से सही नहीं हैं। अपभ्रंशित नामों से मूल नामों को प्रतिस्थापित नही किया जाना चाहिए।

पोवारी और पवारी भाषाओं में अंतर हैं और दोनों अलग अलग स्वरूप और क्षेत्र वार भिन्न भाषाएँ है। लाइब्रेरी ऑफ़ कांग्रेस, सब्जेक्ट हैडिंग, ३१ वे अंक में इन भारतीय भाषाओं के अंतर को स्पष्ट किया है। इस किताब के पृष्ठ क्रमांक ६२३५ में पोवारी भाषा कों बघेली बोली में सम्मिलित कर लिखा हैं की यह पोवार परिवार की भाषा है, जबकि पृष्ठ क्रमांक ५६८० में पवारी भाषा को बुंदेली भाषा में सम्मिलित किया है और इसे लोक साहित्य की भाषा बताया है। १९५१ के पूर्व तक दोनों भाषाओं की विभिन्नता के कारण उन्हें अलग-अलग भाषा परिवार में रखा जाता था लेकिन की १९५१ की जनगणना में नामों की समानता के कारण पोवारी और पवारी को तिर्यक् के साथ हिंदी भाषा परिवार में एक ही क्रमांक पर लिखा जाने लगा।

बैतूल, छिंदवाड़ा और वर्धा जिलों में निवासरत भोयर समाज के द्वारा बोले जाने वाली भाषा भोयरी को १९५० के आसपास से भोयरी पवारी/पवारी लिखा जाने लगा है। हालांकि १९६१ की जनगणना में भोयरी और पोवारी अलग-अलग क्रमांक पर रखी गई थी लेकिन इस समय अपनी मातृभाषा भोयरी बताने वालों की संख्या १०,००० से कम रह गई थी और १९७१ की जनगणना में दस हजार से कम संख्या में बोले जाने वाली भाषाओं कों सूची से हटाने के कारण भोयरी भाषा आगे भाषा सूची में नही आ सकी। लेकिन भोयरी भाषी समूह आगे इसे पवारी भाषा बताने लगे है जिससे यह पवारी/पोवारी में शामिल हो गई। पवारी, भोयरी और पोवारी तीन स्वतंत्र भाषाएँ रही है जिन्हें गियर्सन के भाषाई सर्वे में अलग-अलग समूहों में रखा गया है, लेकिन बाद में आपस में मिलाने से इन तीनों पृथक-पृथक भाषाओं के स्वतंत्र अस्तित्व के विलोप का खतरा उत्पन्न हो गया है।

ऍंथ्रोपोलॉजिकल लिंग्विस्टिक्स वॉल्यूम ७ के पृष्ठ क्रमांक २६८ पर यह तथ्य उल्लिखित है की पवारी(पोवारी) दतिया और आसपास के क्षेत्रों में बोली जाती है। आगे यह लिखा है की १९५१ की जनगणना में ३५,९७९ लोगों ने जिसमें अधिकांश लोग बालाघाट जिला से है, जिन्होंने अपनी भाषा 'पोवारी' बताई। गियर्सन के भाषाई सर्वे में दतिया की पवारी को, बुंदेली की उपभाषा बताई गई थी और पोवारी भाषा को बालाघाट, सिवनी और भंडारा जिलें के पोवारों की भाषा बताई गई थी। इस सर्वे में दोनों भाषाओं का सैम्पल दिया गया है और उसके अवलोकन से यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है की दोनों

भाषाओं में कोई समानता नहीं है, जो १९५१ के भाषाई सर्वेक्षण और बाद की जनगणनाओं में गलती से दोनों को एक साथ और एक ही क्रमांक पर रख दिया गया है।

१९०१ की जनगणना में पंवारी भाषा को पश्चिमी हिंदी भाषा की उपभाषा बुंदेली में शामिल किया था। ग्वालियर जिलें के पंवार राजपूतों के द्वारा बोले जाने वाली भाषा कों पंवारी भाषा कहा गया था। गियरसन के भाषाई सर्वेक्षण में इसे पवारी(Pawari) भाषा लिखा गया हैं। हालांकि यह भाषा केंद्र प्रान्त के पोवारों या पंवार जाति के द्वारा बोली जाने वाली पोवारी भाषा से पुरी तरह से अलग है।

भारत की जनगणना १९०१, सेंट्रल प्रोविन्सेस(3V.) के प्रष्ठ क्रमांक १७३ की टेबल में हिंदी समूह की पूर्वी हिंदी बोली समूह की बोली बघेली की उपबोली पोंवारी को बताया गया हैं। जिसे १,२१,८४४ लोगों के द्वारा बोले जाने का उल्लेख हैं। जबकि भोयरी भाषा को हिंदी भाषा के राजस्थानी समूह की उपभाषा बताया गया है जिसके ४४,०१८ लोगों के द्वारा बोले जाने का उल्लेख हैं।

पोवारी भाषा का पुरातन नाम क्या था इस पर कई मत देखने में आते है। प्राचीन सभी दस्तावेजों में अधिकांश जगह इसका नाम पोवारी(Powari) ही मिलता है जिसका उल्लेख अध्याय २ में विस्तृत रूप से दिया गया है। चूँकि पोवार समाज का दूसरा नाम पंवार भी है इसीलिए कहीं कहीं पंवारी (Panwari/Ponwari) भी लिखा गया है। आजकल कुछ लेखक पोवारी

और भोयरी को उनके बोलने वाले समाजों के विलीनीकरण को बढ़ावा देने के लिए दोनों ही भाषाओं को एक ही नाम पवारी से लिख रहे हैं। उनका एक यह भी तर्क देखने में आता हैं की दोनों भाषाओं में कुछ समानता हैं। इस क्षेत्र की भाषाओं के अध्ययन करने से पता चलता हैं की पोवारी की कलारी, लोधांति, मरारी, कोष्ठी आदि बोलियों में भोयरी बोली की तुलना में कहीं अधिक समानता हैं। समानता के तर्क पर इन सभी भाषाओं को एक ही नाम से नहीं लिखा जा सकता इसीलिए इन सभी भाषाओं का स्वतंत्र रहना बहुत जरुरी हैं। भाषाओं में शब्दों का आदान-प्रदान स्वाभाविक प्रक्रिया हैं लेकिन दो भाषाओं का विलीनीकरण या उनको एक ही नाम से लिखने की कुछ विचारकों के प्रयास तर्कसंगत नहीं हैं।

मण्डल आयोग ने अपनी रिपोर्ट में समाज का नाम पोवार(Powar) दिया था और मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र और छत्तीसगढ़ में समाज का शासन द्वारा स्वीकृत नाम पोवार होना इसका प्रमाण हैं की समाज की भाषा का ऐतिहासिक नाम पोवारी हैं। इसे यह स्वंसिद्ध है की समाज का नाम पोवार हैं तो इसकी भाषा का नाम पोवारी होगा न की पवारी। इसलिए पोवार/पंवार समाज की भाषा का यदि सर्वमान्य नाम ऐतिहासिक तथ्यों और बुजुर्गों के द्वारा उच्चारण के आधार पर देखें तो यह, पोवारी ही हैं भले ही आजकल हिंदी बोलते समय जनसामान्य इसे पंवारी या पवारी भी कहते हैं लेकिन ऐतिहासिक और साहित्यिक तथ्यों के आधार पर इस भाषा का एक नाम पोवारी को ही बढ़ावा देना इस भाषा के साथ न्याय ह

४.

पोवारी बोली, उसका अस्तित्व और विकास

पोवारी को बचाना सबसे प्रमुख कार्य हैं। लगभग १४-१५ लाख के इस समाज ने २०११ की जनगणना में ४ लाख के आसपास लोगो में इस बोली को अपनी मातृभाषा बताया लेकिन भोयरी बोली बोलने वालों ने भी पवारी नाम से अपनी मातृभाषा बताया जिससे जनगणना अधिकारी भ्रमित होकर अपने परिणाम में इसे पवारी/पोवारी संयुक्त रूप से डाल दिया जिसमें पोवारी बोली से अलग बोली भोयरी बोली भी पवारी नाम से समाहित हो गयी और वास्तविक पोवारी बोलने वालों की सही गणना नहीं हो सकी।

तथ्य जो भी हो पर इतनी बड़ी आबादी वाले पोवार/पंवार समाज के द्वारा पोवारी कम बोला जाना दुखद तो हैं। इसीलिए पोवारी लेखन को प्रोत्साहित किया जाना बहुत ही जरूरी हैं। कुछ तो लिखे और कुछ तो बोले। चाहे उसमें छंद/यमक रहे या न रहे पर हम सभी की पहली प्राथमिकता ऐसे साहित्य का निर्माण करना होना चाहिए जो साधारण जनसामान्य के समझ में हो और वो पोवारी संस्कारों के अनुरूप हो।

साहित्य लेखन में कोई बंदिश नहीं होती हैं और उसके अनेक रूप होते हैं और कई बार नए रूप के अनुरूप ही साहित्य की नई विधा बन जाती हैं। जैसे मुक्तछन्द, कविता का वह रूप है जो किसी छन्दविशेष के अनुसार नहीं रची जाती न ही तुकान्त होती है। मुक्तछन्द की कविता सहज भाषण

जैसी प्रतीत होती है। हिन्दी में मुक्तछन्द की परम्परा सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ने आरम्भ की। और पोवारी लेखन को आसान बनाने और प्रोत्साहित करने के लिए इसी शैली से शुरुवात कर फिर उसमें साहित्यिक प्रयोग किये जा सकते हैं।

पोवारी का साहित्य निर्माण/वीडियो/ऑडियो और उसका प्रचार प्रसार पोवारी के विकास में सहायक हैं पर मीडिया में कई ऐसे लेख और वीडियो आये हैं जो पोवारी में हैं और जनसाधारण के द्वारा के बहुत पसंद किये गए पर उसमें समृद्ध पोवारी संस्कार और राजपुताना क्षत्रिय परम्पराओं के दर्शन नहीं हुए। हास्य व्यंग भी अपनी परम्पराओं और मर्यादाओं के साथ सहज और सरल भाषा में होने चाहिए। ताकि पोवारी का प्रचार प्रसार हमारे सांस्कृतिक मूल्यों के अनुरूप ही हों।

भारतवर्ष में पोवारी बोली बोलने और समझने वालों की कुल जनसँख्या लगभग दस लाख के आसपास है। मालवा से नगरधन वैनगंगा क्षेत्र में आकर बसे पोवार(पंवार) समाज की वास्तविक मातृभाषा पोवारी हैं हालाँकि आज १४-१५लाख के आसपास की जनसंख्या का यह समाज अब हिंदी और मराठी का सामान्य बोलचाल में प्रयोग कर रहे हैं लेकिन कुछ वर्ष पूर्व तक इस समाज में पोवारी ही समुदाय के सदस्यों की वार्तालाप की मुख्य भाषा थी। गांवों में दूसरे समाज के लोग भी पोवारी बोली जानते हैं और पोवार(पंवार) समाज के लोगों से इसी बोली में बात करते हैं।

पंवार(पोवार) समाज में विभिन्न सामाजिक कार्यक्रमों में पोवारी बोली में गीत गाये जाते हैं। समाज की महिलाये विवाह, त्योहार, सामाजिक कार्यक्रम और नित्य के कामकाज के साथ पोवारी गीत जाती हैं। इन गीतों को नयी पीढ़ी के लोगों को जानने और सीखने की जरूरत हैं ताकि ये हमारी अमूल्य धरोहर पीढ़ी दर पीढ़ी चलती रहें। इसके अतिरिक्त कई सामाजिक सांस्कृतिक लोक कला जैसे ढंडियार, भजन, कीर्तन आदि पोवारी बोली में किये जाते रहे हैं।

कई लोक कलाकार पोवारी बोली में नाट्य का आयोजन करते हैं। नई पीढ़ी से कई बहुत अच्छे गायक हैं जो पोवारी में गायन कर उसकी रिकॉर्डिंग करके सामाजिक मीडिया के माध्यमों से प्रचार प्रसार कर रहे हैं। इस तरह के कार्यक्रमों से पोवारी बोली का व्यापक प्रचार-प्रसार होता हैं और कला की विभिन्न विधाओं में पोवारी बोली जीवित रहती हैं।

अब तक अनेक लेखकों ने पोवारी बोली में साहित्य का सृजन किया हैं। आज पचास से भी अधिक लेखक पोवारी बोली पर साहित्य सृजन कर रहे हैं और शीघ्र ही समाज के सम्मुख इस बोली में बहुत साहित्य, किताबों के माध्यम से उपलब्ध होगा। आज जरूरत हैं की समाज के विभिन्न संगठनों के साथ पदाधिकारी और जनसामान्य अपनी इस अमूल्य ऐतिहासिक धरोहर, पोवारी बोली को संरक्षित और संवर्धित करने का संगठित प्रयास करें तो यह बोली और अधिक समृद्ध होगी।

आज आधुनिक बनने के चक्कर में हम अपने पूर्वजों की

ऐतिहासिक बोली और अपनी इस पोवारी संस्कृति के गौरव, पोवारी बोली को धीरे धीरे भूलते जा रहे हैं, अब आवश्यकता हैं की पोवारी बोली को फिर से पूर्ण में जीवित करें और अपनी इस धरोहर को संरक्षित और संवर्धित कर, पुरखों के प्रति सच्ची श्रद्धा सुमन अर्पित करें।

५.

पोवारी भाषा के कुछ साहित्यकारों की रचनायें

१. भाषा मा क्रांति आननसाती

भाषा मा क्रांति आननसाती
प्राण सींचित करके लिखूं ।
भाषा मा क्रांति आननसाती
समर्पण भाव लक लिखूं ॥

सागर ला गहराई मांगू ।
बादलों ला उंचाई मांगू ।
भाषा मा क्रांति आननसाती,
बहारों ला सौंदर्य मांगके लिखूं ॥

अंबर लक शब्दतारा आनूं ।
सागर लक शब्दमोती आनूं ।
भाषा मा क्रांति आननसाती,
माँ शारदा को आशीष लक लिखूं ॥

स्वयं की क्षमता लक लिखूं ।
स्वयं को विवेक लक लिखु ।
भाषा मा क्रांति आननसाती,
स्वयं को खून लक लिखूं ॥

देहभान भूलकर लिखूं l
संसार भूलकर लिखूं l
भाषा मा क्रांति आननसाती,
सर्वस्व त्यगकर लिखूं ll

सूर्य को तेज लक लिखूं l
हवाओं की आज़ादी लक लिखूं l
भाषा मा क्रांति आननसाती
जिंदगी को दांव पर लिखूं ll

सूर्य ला आलोक मांग के लिखूं l
कल्याण की कामना लक लिखूं l
भाषा मा क्रांति आननसाती,
रणभेरी को स्वर मा लिखूं ll

इतिहासकार प्राचार्य ओ. सी. पटले

बुध.19/05/2021.

=============

२. पोवार समाज अना पोवारी बोली की ऐतिहासिकता : एक संक्षिप्त आकलन

पोवार समाज अना उनकी पोवारी बोली ये दुयी एक प्राचीनतम वस्तुस्थिती ला दर्शाव् सेती. पोवार समाज को उद्गम कसो भयेव् येको पूर्णरूपेण अना सही सही इतिहास आब् भी इतिहास को गर्भ माच् स्थित से. आमरो काही पूर्वजईनन् आमरो इतिहास को खोज करन् को बोहुत बढिया प्रयास करी भी सेन्. तसोच् वर्तमानमा भी आमरो समाज का काही अधिकृत इतिहासतज्ज्ञ आमरो इतिहास को खोज करन् को दिलोजानलका प्रयास करच् रह्या सेती.

कोणतोच् समाज को इतिहास येव् काही एखादो बिंदू-ठहराव की अवस्था नही रव्ह्, वू एक अनवरत प्रक्रिया को सदाचलित प्रयास को प्रतिफल रव्ह् से. कोणतोच् समाज को तथ्यपरक इतिहास को खोज करन् साती तत्कालीन -- हस्तलिखित पर्णोंको संग्रह, शिलालेख, ताम्रपट, बखर/भाट साहित्य, चलन का पर्याय, वस्तु-विनिमय का पर्याय, ... असो काही महत्त्वपूर्ण घटकईनको एकात्मिक रुपमा करेव् गयेव् तटस्थ अध्ययन की अनिवार्यता रव्ह् से. आमरो पोवार समाज को काही मान्यवर पूर्व-विद्वानईनन् येन् दृष्टीलका काही अध्ययन करके ठेयी सेन्. वोन् पूर्व-मान्यवरईनको येव् अध्ययन वर्तमानमाको सद्हेतुकारक अध्ययनकर्ताईनला बोहुतच् लाभदायी अना उपयोगी साबित होय् रही से. वोन् पूर्व-मान्यवरईनको येव् अध्ययन वर्तमानमाको अध्ययनकर्ता ईनला मजबूत धरातल को रुपमा भी उपलब्ध होसे अना संग्-संगच् वोन् पूर्व-अध्ययनमा

काही कमजोरी रह्य गयी रहेत्, त् उनला सुधारनला भी सहायक साबित होसे. येको मतलब असो नोहोय् का आमरो मान्यवर पूर्वजईनन् को अध्ययनला आम्ही कम आंके पाह्यजे, असो बिलकुल नाहाय, बल्कि आमरो वर्तमानमाको अध्ययनकर्ता ईनला पह्यलेको अध्ययनच धरातलवानी साबित होसे, मुनस्यारी वोन् पूर्वजईनको आम्ही आभारच् माने पाह्यजे. आमरो वोन् मान्यवर पूर्वजईनन् को येन् धरातलीय अध्ययन ला नकारस्यानी आम्ही आपलीच डफली बजावन् लग्या त् या अशी वृत्ती मंज्या आमरो पूर्वजईनन् संग आमरो कृतघ्नपणाच मानेव् जाये पाह्यजे.

पोवार समाज की ऐतिहासिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, आर्थिक, सामाजिक वस्तुस्थिती को सही सही आकलन करन् साती आमला पोवार समाज की प्राचीनतम बोली -- पोवारी बोली -- की उपरोक्त बिंदुईन परा बोहुत बोहुत महत्त्वपूर्ण असो भूमिका पर भी आपलो अध्ययन केंद्रित करनो अत्यावश्यक होय् जासे. असो कहेव् जासे का कोणतोच् समाज को संस्कृती को सही सही आकलन करन् साती वोन् समाज को बोली/भाषाको ऐतिहासिक "उत्खनन" अना भाषिक-अध्ययन की अत्यधिक अनिवार्यता रव्ह् से. येन् दृष्टीलका देखेव् जाये त् आमरो वर्तमानमाको भाषातज्ज्ञईनन् अद्ययावत भाषाशास्त्र की अद्यतन संकल्पनाईनको प्रकाश मा पोवारी बोली को अध्ययनला प्राधान्यक्रम देनो अनिवार्य होय् जासे. येन् बिंदू परा भी आमरो पोवार समाज को विद्वान ईनन् बोहुत बढिया असो महत्त्वपूर्ण कार्य पूर्व-मा करी सेन् व आब् भी कर रह्या सेती असो दिस् रही से. या बात आमरो पोवार समाज साती बोहुतच गर्व की बात कहे पाह्यजे. एक अनुमान को अनुसार अंदाजन 1900-1910 को दरम्यान पोवारी बोली की रचनाईन को

आधुनिक दौर देखेव्/मानेव् जासे. तब पासनाच्, छिटपुटरुपमा काहे का रव्ह् ना, पोवारी बोली की रचना मौखिक रुपमालका लिखित स्वरूपमा आवनकी सुरुवात भयी, असो इतिहास से. येन् बिंदू/विषय परा अनखी सटीक अना साधार अध्ययन की जरूर आवश्यकता से. पर येन् बिंदू/विषय पर को ऐतिहासिकता ला आम्ही सरसकट नकार नही सकजन्.

असो आमरो येन् पोवार समाज अना पोवारी बोली की प्राचीनतम ऐतिहासिकता ला जानबुझकर नजरअंदाज करस्यानी काही स्वनामधन्य अना तथाकथित लिख्यापढ्या कव्हनेवाला, छद्म-अभ्यासक व्यक्ती येन् बिंदू/विषयपरा आब् आबच् वर्तमानमा मी/आम्हीच् काम सुरु क-या सेजन् असो लिख/सांगस्यारी वर्तमानमाको युवा पिढीला बरगलाव् सेती अना इतिहास की छद्म, विकृत, भ्रमित/भ्रमजनित प्रवृत्तीला बढावा देन् को प्रयास कर् रह्या सेती, असो दिस् रही से. मुनस्यारीच् वर्तमानमाको युवा पिढी साती येव् बोहुतच् आवश्यक होय् जासे का असो छद्मी, विकृत, भ्रमित/भ्रमजनित धारणाईनको गर्त मा बिलकुल नही फसे पाह्यजे अना खुद-स्वयं अध्ययन करस्यानी पोवार समाज अना पोवारी बोली को ऐतिहासिकता की सही सही पह्यचान ला उभारे पाह्यजे. काहे का, स्वयं-अध्ययनच् ऐतिहासिक तथ्य ला उजागर करस्यानी विकृत, भ्रमित अना छद्मी इतिहास को प्रयास ला ध्वस्त कर सक् से.

जय पोवार समाज! जय पोवारी बोली! जय राजा भोज!

ॲड.लखनसिंह कटरे

बोरकन्हार-441902, जि.गोंदिया

(पोवारी भावानुवाद : 19.05.2021)

३. धारानगरी का पोवार

जोडनी का घर ना मोठो जात को अवार
वैनगंगा को तटपर धारानगरी का पोवार. ।।धृ.।।

लंबी लंबी सेत सरई. मोठी मोठी डयल,
जबरदस्त मयाली, ना कमचीपर कवल.
कुटार मिश्रणलका बनी माती की दिवार.
वैनगंगा को तटपर धारानगरी का पोवार. ।।१।।

घर मंघ् बाडी फऱ्या सेत मिरची, बगन,
छपरी को सामने भलो मोठो से आंगण.
बसनला सेत धडी, करनला बात बिचार.
वैनगंगा को तटपर धारानगरी का पोवार. ।।२।।

खुंटपर बंध्या गोरा, शेरी,गाय बैल, भस,
खेत पिकसे चना, गहू, लाखोरी, जवस.
धान को खेती मा फिरसे नांगर ना दतार.
वैनगंगा को तटपर धारानगरी का पोवार. ।।३।।

उन्हारो मा रवसे बखरनी करनकी घात.
वोको बाद फेकसेत बैलबंडीलका खात.
बांधिमा भरसेत खंडी दुयखंडी की खार.
वैनगंगा को तटपर धारानगरी का पोवार. ॥४॥

खेत का पुंजना देखकन होसे अभिमान.
चुरनो को बेरा खराटा, आकोडी महान.
धान चावूर को फसलका भरसेत भदार,
वैनगंगा को तटपर धारानगरी का पोवार. ॥५॥

श्री देवेंद्र चौधरी, तिरोडा

ता. १७/०२/२०२१/मो. ९२८४०२८७१४

=========================

४. हामरी बोली

बडीच कमाल से हामरी पोवारी बोली,
जसी खट्टी-मीठी हाजमोला की गोली.

हाँसी, मजाक का पुट सेत येको मा,
व्याकरण की भी छूट सेत येको मा.
अओ माय, अगो अजी जसा शब्द,
इनका मीठा-मीठा घूट सेत यको मा.
बोलन वाला दिख सेती मस्तो की टोली.
जसी खट्टी-मीठी हाजमोला की गोली.

दिल मा भेदार से बोल येको मीठो,
कभी लगसे या सिलबट्टा को तीखो.
आपरोपन ही येकी सुन्दरता आय,
जसो बोल्यात येला वासोच लिखो.
मोती जसी या झरस्यार भर देसे झोली.
जसी खट्टी-मीठी हाजमोला की गोली.
गाँव की टुरी जसी जासे शहर मा,
तसिच लजावसे या आपरो घर मा.
जरासो येला मान देओ गरो लगायके,
या रक्षा करें अस्तित्व को समर मा.

अना या चलाय सकसे सीमाओं पर गोली.
जसी खट्टी-मीठी हाजमोला की गोली.

सबझन भी बोलो, सौ झन मा बोलो,
टोंड पर भी बोलो अना मन मा बोलो.
जयगढ़कालिका, जयराम, राजाभोज,
नाम इनका लेस्यार जन-जन मा बोलो.
आपरी अस्मत लाई चाहे रोटी खाओ कोली.
जसी खट्टी-मीठी हाजमोला की गोली.

बडीच कमाल से हामरी पोवारी बोली,
जसी खट्टी-मीठी हाजमोला की गोली.

तुमेश पटले "सारथी"
केशलेवाड़ा (बालाघाट)/दि.- 15/12/2020

==================================

५. अभंग

घर घर घूमे,पोवारी रचना
करूसू याचना,नम्र लका !!

नाहाय या जात,या त् से संस्कृती
करज् जागृती,समाजमा !!

पुण्यवान लोक,पूर्वज भयात
सत्कर्म कर्यात,जीवालागी !!

भारतीय मन,भारत जगत
समाज प्रगत,करनला !!

हिंदू से दर्शन,जीवन यापन
पूर्वज तर्पण,साजरो से !!

सुंदर चलन,पोवार रिवाज
बिना वू आवाज,गरजसे !!

शांत सिद्ध शीत,भूमी से भारत

चल अविरत,नित्य लक !!

साहित्य बढसे,संस्कृती बी बढ़े

प्रतिजन लढे,जीव लक !!

रणदीप बिसने

=================

६. जहाँ धार तहाँ पंवार, जहाँ पंवार तहाँ धार ।

(पृथ्वी तणाः पंवार)

पोवार / पंवार शब्द को उच्चारण मात्र लका पोवारी बोली अना पंवार समाज को गौरवशाली इतिहास को सहज भाव लक दर्शन होय जासेत । इतिहास असो की रोम-रोम पुलकित होय जासेत जेकी गाथा पूरो जगत मा अधिकारिक रूप लका दर्ज सेती। यको प्रचार प्रसार मा पोवारी सत्याग्रह का प्रहरी आपलो सौभाग्य अना सामाजिक कर्तव्य की जाणीव कर सेती । मायबोली पोवारी को संवर्धन साठी संकल्प बद्ध सेती ।

जेको गौरव, वैभव, राज कीर्ति चिरकाल लक् शाश्वत से असो संस्कृति का संवाहक मुन स्यारी आमरा पूर्वज जो परमार वंश नाव लका जान्या जासेती । पोवार / पंवार 36 कूल की संस्कृति अर्थात पोवारी संस्कृति येन मायबोली मा अज भी समाहित से। पंवार वंश की महिमा पुराण को प्रमाण लक्खा येन वंश की उत्पत्ति गुरु वशिष्ठ नआबूगड़ पर्वत मा एक यज्ञ को आयोजन कर वीर पुरुष की उत्पत्ति करीन जेला नाव देईन परमार । राजा परमार न गुरु इच्छा अनुरूप अन्याय को खात्मा कर न्याय को सुशासन की स्थापना करिन ।

साहित्य संगीत कला विहिनः साक्षात पशुहः पुच्छविषाणहिनः
अर्थात जेव व्यक्ति साहित्य संगीत अना कला लक रहित से, उ पुसटी अना सिंग बिना साक्षात पशु बराबर से ।

मुनस्यारी आमरा पूर्वज राजा, राजा भर्तहरि, सम्राट विक्रम विक्रमादित्य, राजा उपेंद्र परमार, राजा शीयक, राजा मुंजदेव, राजा भोजदेव, राजा उदियादित्य पंवार, राजा जगदेव पंवार, राजा लक्ष्मण देव पंवार, राजा नरवर्मन देव, राजा महलक देव जसा अनेक राजा येन वंश का भया जिनन क्षत्रियत्व को संग संग साहित्य संपदा को सृजन अना सवंर्धन करिन। मालवा राजपुताना मा अतीत काल मा कई क्षत्रियवंश भया अना येन क्षत्रिय वंश मा पंवार वंश को मोठो मान से।

समय बीतन को संग क्षत्रिय गिनको कई क्षेत्र इन मा विस्थापन भयो। मध्य भारत मा भी मालवा का क्षत्रिय राजवंश बेरा-बेरा परा आयकन राज करीन एको इतिहास मा उल्लेख भेटसे। भंडारा गज़ेटियर १९०८ को अनुसार देवगढ़ नागपुर को राजा बुलन्द बख्त न आपरी सैन्य ताकत ला बढ़ावन लाइ उत्तर पश्चिम भारत लक् क्षत्रियगिन को एकीकरण करीन अन् उनन् आपरो राज्य मा क्षत्रिय योद्धा गिनला सैन्यपद, जमीन, किल्लेदारी अना जागीरदारी देयकन येन क्षेत्र मा बसाहत मा प्रोत्साहित करीन।

आमरा पुरखा गिण परिस्थितिवश आपरो राज्य खोवन को बाद भी सतत मुस्लिम आक्रांता/विध्वंसक नीति इनको विरोधी रह्या अना कोनतो भी जवाब देन को अवसर नहीं चुकत होता। राजा बुलंद बख्त को प्रस्ताव ला स्वीकार कर मध्यभारत मा आपरो परिवार, धन दौलत अना आपली अश्व सेना को संग आयकन नगरधन-वैनगंगा को क्षेत्र मा बस गया। मराठा काल मा भी पंवार समाज न उनको संग सैन्य भागीदारी करी होतीन अन् उनला

पुरस्कार स्वरूप वैनगंगा क्षेत्र मा जमीन अन् जागीरदारी विजय को प्रतीक मा देईन।

बुलंद बख्त अन् मराठा काल मा मालवा राजपुताना लक् आयकन ३६ क्षत्रिय कुर को पोवार / पंवार बनावन को उल्लेख इतिहास मा दर्ज से। येन् संघ मा शामिल कुल, राजपूत कुल होता अन् वय आपस को शाखा मा शादी-बिहाव करत होता। वैनगंगा क्षेत्र की उपजाऊ धरती मा पोवार समाज का योद्धा काश्तकार भय गया अन् आपरी राजपुताना पहचान ला भी बनाय के राखिन। मराठा राजवंश को संग इनको सैन्य अन् राजकरण मा भी सहयोग होतो, एको लाई ३६ कुर को पोवार पंवार मा राजपूत अना मराठा संस्कृति को समन्वय दिससे। असल मा ये दुही संस्कृति सनातनी हिन्दू धरम की संस्कृति आय एको लाई इनको समन्वय पोवारी संस्कृति मा स्पष्ट रूप लक् दिससे।

आमरो पुरखा गिनना आपरी सनातनी पोवारी क्षत्रिय संस्कृति ला संजो कर राखी सेत अन् अज भी ये आपरा मूल रूप मा दिससे। माय वैनगंगा को क्षेत्र बालाघाट, गोंदिया, भंडारा अना सिवनी मा पोवार पंवार मूल रूप लक् बस्या होता। अज भी ये येन जिल्हाहीन मा आमरो समाज बहुसंख्यक सेती। कृषि कार्य को अलावा पोवार पंवार समाज हर क्षेत्र मा तरक्की कर रह्या सेती अन् देश को विकास मा सब लक खांद लक खांद मिलायकन चल रह्या सेती। ३६ कुर को पोवार पंवार समाज की आपरी विशिष्ट बोली अना संस्कृति से। पोवारी बोली अन् पोवारी संस्कृति को मूल रूप ला पंवार पोवार

समाज न आपरो पुरखा गिन को मूल क्षेत्र मालवा राजपुताना लक धरकन आनी सेन। पोवार समाज को भाट गिनना आपलो पोथी मा ये तथ्य दर्ज करि सेन।

कई ३६ कुर का क्षत्रिय मालवा राजपुताना को अलग अलग क्षेत्र लक् आयकन नगरधन मा सबलक पहिले बस्या होता। ये तथ्य ब्रिटिश गैज़ेटिएर, जनगणना को दस्तावेज अन् इतिहास को कई किताब मा स्पष्ट रूप लक मिल जासेत। १७०० लक १७७५ वरी पोवारी बोलने वाला राजपूत समुह वैनगंगा को क्षेत्र मा स्थायी रूप लक बस गया होतो। १३१० मा मालवा को परमार वंश को राजवंश को समाप्ति को बाद वोन क्षेत्र मा मुस्लिम आक्रांता गिन को शासन स्थापित भय गयो होतो। आमरा पुरखा गिनना आपरी पहचान कभी नहीं खोयीन।

नगरधन आवन को पहिले भी आमरो पुरखा मालवा लक बुंदेलखंड वरी विस्थापित भया। भाषाविद कसेत कई पोवारी बोली मा राजस्थानी, मालवी अना बघेली को प्रभाव दिस से, येन तथ्य ला समर्थन देसे १३१० लक १७०० को बीच मा ३६ कुल का ये क्षत्रिय आपरो समूह मा उत्तर कन विस्थापित भया अना १७०० को आसपास बुलंदबख्त को आग्रह परा नगरधन नागपुर मा बस्या। रसेल की किताब अना ब्रिटिश गैज़ेट मा पोवार समाज को ३६ कुर को इतिहास मिल जासे की येव समूह आपस मा एकीकृत होतो अना आपरी संस्कृति अना पोवारी बोली ला सहेजकर ठेई सेन। भाषायी सर्वे मा पोवारी बोली, इतिहास अना स्वरुप को उल्लेख से।

सेंट्रल प्रोविसेंसेस सेन्सस १८७२ को अनुसार मालवा का प्रमार नगरधन (रामटेक) मा आयकन् बस्या होता। पोवार इन् न नगरधन मा एक किला बनावन को भी येन जनगणना दस्तावेज मा उल्लेख से। यन् जनगणना मा भंडारा जिला मा ४५, ४०९, सिवनी जिला मा ३०,३०५ अना बालाघाट जिला मा १३,९०६ पोवार समाज की जनसँख्या होती। रिपोर्ट्स ऑफ़ एथनोलॉजिकल कमिटी, नागपुर, १८६८ मा भी औरंगजेब को समय मा मालवा को पंवार राजपूत गिनको नगरधन आयकन बसन को उल्लेख कर सेती।

आयरिश अधिकारी अना भाषाविद श्री जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन को नेतृत्व मा १९०४ मा देश व्यापी भाषायी सर्वेक्षण को काम भयो होतो। लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ़ इंडिया, नाव की आपरी रिपोर्ट को पृष्ठ क्रमांक १७७-१७९ मा श्री ग्रियर्सन महोदय को द्वारा पोवारी बोली को विषय मा लिखी गयी से। उन न येन रिपोर्ट मा तथ्य का उल्लेख करि सेन की पोवार, मुलत: मालवा का राजपूत प्रमार आती जिनकि भाषा पोवारी से। १८९१ को जनगणना मा वैनगंगा क्षेत्र को बालाघाट, भंडारा (गोंदिया) अना सिवनी जिला मा पोवार (पंवार) समाज की जनसँख्या १,१३,६०४ होती अना वोय पोवारी बोलत होता। कैटेलॉग ऑफ़ लैंग्वेज एंड फैमिलीज़: ग्लूटोलॉग & जॉर्ज अ. ग्रियर्सन, १९०४ मा यव तथ्य उल्लेखित से की पोवारी, इंडो आर्यन सेंट्रल ज़ोन की उपभाषा, ईस्टर्न हिंदी की उपभाषा से बोली भाषा को अध्ययन करन वाली संस्था मल्टी ट्री, मा पोवारी बोली को कोड pwr, ,

कोड: ISO ६३९-३, इंडो-यूरोपियन फॅमिली देनो मा आयी से । Ethnologue : The language OF world मा पोवारी बोली ला वैनगंगा पोवारी [(Vyneganga Powari) (pwr vyn) ला अभिलेखित करी गयी सेती | OLAC रिकॉर्ड मा पोवारी बोली ला pwr कोड लक् आपरो रिकॉर्ड मा शामिल करी सेन।

आजादी को बाद को प्रथम जनगणना दस्तावेज Language Handbook: Chhindwara, Betul, Hoshangabad, Nimar and Balaghat Districts, 1956 मा बालाघाट जिला मा पंवार (पोवार) समाज की बोली पोवारी को उल्लेख से । तसोच Language Handbook : Nagpur, Chanda, Bhandara and Amrawati Districts मा भंडारा जिला मा पोवारी नाव लक पोवार (पंवार) समाज की बोली को उल्लेख से ।

सेंट्रल प्रॉविन्सेस डिस्ट्रिक्ट, गजेटियर्स, बालाघाट डिस्ट्रिक्ट (१८९१-१९०१) को पृष्ठ क्रमांक १३ मा पोवार की बोली पोवारी अन् पोवारी बोलन वाला की संख्या ४१,०४५ दर्शायी गयी से।

येन कड़ी ला आगे बढ़ावन साठी अना पोवारी को संवर्धन साठी समाज का बहुत सा वरिष्ठ साहित्यकार प्रयासरत सेती | पोवारी संस्कृति को माध्यम लका सन्माननीय कवि न आमरो पूर्वजो इन की धरोहर ला विराम न देता आवनेवाली नवीन पीढ़ी साठी पोवारी संस्कृति की रचना कर स्यारी समाज मा एक नव क्रांति/अलख जगावन को प्रयत्न करी सेन।

पोवारी संस्कृति को रचना संग्रह को माध्यम लका पोवारी को हर पहलू का मार्मिक, तार्किक, ऐतिहासिक महत्व, सँस्कार, रीति-रिवाज, वर्तमान व्यवसाय, त्योहार, वीरगाथा, राज वैभव, पोवारी का कुलदैवत, कुलमाता, पंवार तीर्थ सिहारपाठ बैहर की विस्तृत अना बोधपूर्ण जानकारी को खजाना पोवारी बोली मा सरल सहज रूप मा वर्णित करी सेन।

आमरो मायबोली को महत्व अना पोवारी सँस्कार को एक अटूट बन्धन से। मायबोली आमरो सँस्कार को आधार से, आमरो विरासत की संवाहक सेत। आमरो वजूद की दस्तक से आमरी मूल पहचान अना भविष्य को आधार से। मायबोली आमरो समाज की तारणहार से।

नरेशकुमार गौतम उपविभागीय अभियंता, मुम्बई

उपाध्यक्ष, अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार/पंवार महासंघ

२८/०३/२०२१

============

७. सहनशीलता

नारी सेव नारंगी मी सप्तरंगो ले रंगी मी,

संस्कार सभ्यता की धुरी मी,

कोनी गर धुमिल कर मोरो आंचल आग उगलती छुरी मी।

नारी सेव नागंगी मी सप्तरंगो ले रंगी मी।।

नोको भटकाओ अता मोला नोको छेडो मोरो मन ला,

शक्ति को स्वरुप मी माय

जगत जननी को आशीश मोला।

नारी सेव नारंगी मी सप्तरंगो ले रंगी मी।।

सीता को से सत मोरो मा काली की हुंकार से,

रानी लक्ष्मी अहिल्या वानी मोरी छवी साकार से।

गर छेडो मी डरु नही कोनी को छल ले छलु नही।

नारी सेव नाऱंगी मी सप्तरंगो ले रंगी मी।।

माय,बहीन,बेटी,बहु चारयी मोरा हथियार सेत,
गर ललकार उठी मी त जर जाहे संसार ये।

अबला नही मी अता सबला दीखाहु, छल ,बल ,माया को रुप ।
नारी सेव नारंगी मी सप्तरंगो ले रंगी मी।।

विद्या बिसेन

बालाघाट

=============

८. फक्त पोवारीच शुद्ध

पोवारी बोली से मोरी

शब्द रतनकी खान

मोला मोरो पोवारीको

भाऊ सार्थ अभिमान ||१||

रीतिरिवाज संस्कार

हिंदू धर्म सनातन

परंपरा विधीमा से

वैज्ञानिक दृष्टिकोन ||२||

नाहाय भ्रम कोनतोबी

नेंग दस्तूर प्रथामा

जीवनकी सिख भेटे

पुराण सार कथामा ||३||

अशी संस्कारलं सजी

अलंकारिक पोवारी

शुद्ध वर्तनवाचक

सुर तालमा उच्चारी ||४||

वोका आमी बालबच्चा
माय आमरी पोवारी
चलो कर्ज चुकावबी
पोवारीमा बोलस्यारी ||५||

जसी माय पिवावं से
आपलो पवित्र दूध
तसी पवित्र पोवारी
फक्त पोवारीच शुद्ध ||६||

गर करो पोवारीला
दीन हिन अपभ्रंश
चकनाचुर होये गा
क्षत्रिय प्रमार वंश ||७||

बनी छत्तीस कुरकी
सुंदरशी फुलमाला
अर्पू वाग्देवी शंभूला
गडकालिका माताला ||८||

धन्य क्षत्रिय पोवार

करो मनमा बिचार

जगावो चेतना करो

पोवारीको जिर्णोद्धार ||९||

देव नाराज वोका जो

पोवारी बोलन लजासे

बोलो असी पोवारी की

विक्रमसेन भोज हासे ||१०||

डॉ. प्रल्हाद हरिणखेडे "प्रहरी"

डोंगरगाव/ उलवे, नवी मुंबई

मो. ९८६९९९३९०७

==========================

९. हिरवो संसार

सजावो आता खेती की धुरा पार,
आयव धरती माय को त्योहार ll

से धरती माय को बेटा तैयार,
सजावन खेती की धुरा पार ll

भय गयी से हिरवो हिरवो संसार,
श्रावण मास को पावन त्योहार ll

सज गयी से आता धरती माय,
सब मिलकर देवो वोला सजाय ll

चार चांद देवो आता लगया,
सुंदर सुंदर झाड़ सब लगाय ll

लगन लगी आता झुला की बहार,
सजनलग्या पशू पक्षी का संसार ll

होय जावो सब पोवार तैयार,
आय गयव श्रावण को त्योहार ll

भोले नाथ ला नमावो बार बार,
होय जाये पोवारी कुल उद्धार ll

श्रावणमास को पोवारी लक नाता,
गीत गांवो पोवारी का आता ll

सजावो दरबार भंडारी को आता,
भोलेनाथ से सबको दाता ll

प्रा.डॉ.हरगोविंद चिखलु टेंभरे
मु.पो.दासगाँव ता.जि.गोंदिया
मो९६७३१७८४२४

==========================

१०.क्षत्रिय की तलवार - पोवार

हमी आजन पोवार,मूल ठिकानो हमरो धार
राजा भोज सरीखा पुरखा हमरा, हमी उनका कर्णधार।
हमी आजन पोवार.....

धरती माय को कोरा मा खेलन वाला
माय गढ़कालिका ला पूजन वाला
स्वाभिमानी काश्तकार।
हमी आजन पोवार...

चवरी पर की बिरानी, खेत मा को खामला
प्रकृति लक जुड़या, रीति रिवाज हमरा साजरा
नवी पीढ़ी मा इनको करनो से संचार।
हमी आजन पोवार....

बेटी माई की गरिमा ला मानन वाला हमी
'दहेज' जसी कुप्रथाओं लक रह्या सेजन दूर
अखिन एक कदम बढ़ावबीन बहू बेटी की शिक्षा कन त
समाज मा आय जाहे उन्नति को पूर।

उठो उठो गा पोवार बंधु, शिक्षा को 'दीवो' जराओ।

अकर्मण्यता को अंधारो ला हटायकर

आनो 'बौद्धिक्ता' की नवी सकार।

हमी आजन पोवार...

ग़रीबी, अशिक्षा, नशा को जहर ला काटो

अमीरी गरेबी मा समाज ला नोको बांटो

भेदभाव की भावना पर,करो जोर लक प्रहार।

उठाओ क्षत्रियता की तलवार।

हमी आजन पोवार.....

ज्योत्सना पटले टेंभरे

बालाघाट (म. प्र.)

========================

११. पोवारी बोली नही बल्कि आय एक सभ्यता

दरअसल पोवारी बोली या भाषा पोवार समाज को दर्शन आय। येन बोली मा इतिहास की गाथा दबी से। बोली समुदाय को पूर्व अस्तित्व, स्थान, सोच को मर्म धारण करके से। बोली को शब्द न शब्द आपली कहानी लेयकर से। पोवारइनकी पोवारी मात्र एक बोली च नही त् वा एक सभ्यता की परिचायक शब्द रूप संवेदना आय । पोवारी को नाम मा च पोवारइनकी पहेचान जड़ी से। पोवारी मा आत्मीयता से, प्रेमळपणा से, माय की माया से। पोवारी आमरी पहेचान आ ।

पोवारी प्राचीन बोली, भाषाइनको अज को रूप आय। पोवारी 36 कुल पोवार समुदाय की बोली आय। यव समुदाय जहाँ जहाँ पूर्व काल मा रह्यव वहा वहा की भाषा की छाप येन सामुदायिक बोली परा चोवसे। गुजराती, राजस्थानी, मालवी , हिंदी, बुंदेली , हिंदी आदि को प्रभाव पोवारी मा चोवसे।

मध्य भारत मा अलग अलग समाज की अलग अलग बोली भाषा प्रचलित सेत जसी मरारी, कोष्टी, लोधी , भोयरी, झाड़ी, गोंडी, हिंदी , मराठी आदि। हिंदी मराठी एन्ग्रेजी भाषा को प्रभाव बढयव त् सामुदायिक बोली मंग रय गयी। शासकीय व शिक्षा क्षेत्र को वरदहस्त जिन भाषाइनला लाभ्यव वय सब भाषा ज्यादा प्रचलन मा बढ़ी। जबकि सामुदायिक बोली दम तोड़न लगी। जसो जसो पोवार समुदाय शहर को तरफ आकर्षित होन लग्यव तसो तसो

शहर मा जो बोली चलत रहे वोला च आपली भाषा बनायके आपली पुरखाइनकी बोली लोग सोडन लग्या। शहर मा सह अस्तित्व बी वोको कारण आय। पहेले की कई बोली को अस्तित्व आब खतरा मा आय गयी से। अंग्रेजी सब परा भारी पड़ रही से। हालांकि प्राचीन बोली भाषा को अस्तित्व नही मिटे पायजे असो बहुतसा विचारक लोगिईनला लगसे। येन मामला मा यूनाइटेड नेशन्स संघठन को कार्यक्रम बी चल रही से।

हजारों साल लका ये बोली भाषा चलत रही , बनत रही, बदलत रही। आब वर्तमान मा अचानक बोली की समाप्ति को तरफ की यात्रा चिंता को विषय आय। पोवारी बोली को डिजिटल दुनिया मा लिखित स्वरूप मा अस्तित्व को कारण बोली संवर्धन की आस बंध रही से। गाव मा आब बी पोवारी बोली प्रचलन मा से , मुन आब बी पोवारी जीवित से असो लगसे।

पोवारी बोली को साथ साथ आमरी जीवन शैली, संस्कृति बी आय। आमरी परम्परा, विवाह गीत, दस्तूर, रीति, पूजा पद्धति, खानपान इन सबको मिलाजुलो रूप पोवारी आय। इन सबमा एक सभ्य समाज को दर्शन होय जासे। अच्छो समाज को अस्तित्व बन्यव रहे मुन बोली अना संस्कृति को अस्तित्व टिकयव रव्हनो बी जरूरी से।

पोवार समाज को सामुदायिक अस्तित्व साति पोवारी बोली अना संस्कृति बहुत महत्वपूर्ण से, काहे की पोवारी पोवारीईन की पहेचान आय अना पहेचान टिकी रहे पायजे।

श्री महेन पटले

१२.मायबोली पोवारीको करो संवर्धन
(अष्टाक्षरी काव्यलेखन)

बोली छत्तीस कुऱ्याकी
आय आमरी पोवारी |
वैनगंगा थड़ी परा
फली फुलीसे या न्यारी ||१||

आमी प्रमार वंशका
सच्चा वीर वारकरी |
वंश जरी एक आय
पर अलग शिदोरी ||२||

नोको तुमी मिसरावो
पोवारीमा वा भोयरी |
मुळ अस्तित्व दुयीको
मिट जाये सब खरी ||३||

करो दुयी बोलीसाती
तुमी अलग लिखान |

रहो संघटीत पर

नोको एकमा बखान ||४||

करो अलग अलग

रिती रिवाज जतन |

दुयी मायबोली साती

करो अलग सृजन ||५||

मायबोली पोवारीको

करो तुमी संवर्धन |

करं बिनती तुमला

हात जोड गोवर्धन ||६||

(शिदोरी = संस्कृती, रितीरिवाज)

✍ इंजि. गोवर्धन बिसेन, गोंदिया

मो. ९४२२८३२९४१

==========================

१३. छत्रिय पोवार

अग्नीकुंट लक् उत्पत्ती छत्रिय पोवार
चार खंड मा विभाजित छत्रिय पोवार.

धरम रक्षा धर्म सबकी रक्षा करम छत्रिय
वशिष्ठ गोत्र परमार कहलाया पोवार.

धरा मा शितल जल सुध्द सभ्यता पोवार
दुनिया मा ममता मय गौरव से पोवार .

धग् धगती लहरे तलवार ढाल पोवार
आक्रांता ला निपटाये छत्रिय पोवार.

धार लक् चले विर नगरधन ला पोवार
मराठा संग लहराये पानिपत मा पोवार.

बुलंद संग जुडे तार मिले आचल पोवार
कन कनमा वैनगंगा को गोद मा पोवार.

संस्कृती सभ्यता की जग मिशाल पोवार
स्वाभिमान को रकत रकत धरोधर पोवार.

ना झुके बदले धर्म स्वभाव छत्रिय पोवार
सारो जहां मा सांगे आमी छत्रिय पोवार.

शिव पुजारी महामाया का उपासक पोवार
चवरी पितृपुजक हिंदू का प्रतिक पोवार.

बदलतो धारामा बदले खुदला छत्रिय पोवार
पर बदले नही आपलो तेवर छत्रिय पोवार.

सच्चाई की लक्ष्मन रेसा छत्रिय पोवार
मान कट जाये झुके नही छत्रिय पोवार.

सारो जगमा से मिशाल छत्रिय पोवार
जनेवधारी हिंदूकी मशाल छत्रिय पोवार.

फेटा बाराकसी पच्च्या सान छत्रिय पोवार
कान मा बारी मिसी सुर्यतेज् छत्रिय पोवार.

येक वचनी मानमर्यादा की खदान छत्रिय
हिंद संस्कृती को अनमोल रत्न छत्रिय पोवार.

वैनगंगा को गोद मा सिराये जनेव पोवार.
कमरमा बांधे करदुडा विर् क्षत्रिय पोवार.

श्री छगनलाल रहांगडाले

9158552860

खापरखेडा, नागपूर

======================

१४. पोवारी गीत - राम की महिमा

येव कंचन काया माटी से, अवगुन की येव धाम से
भव तरन को नाम ज्योतिर्मय,जय जय सीताराम से ॥

राम चरन को पड़्यो भर ले
पत्थरा ले नारी भयी अहल्या
राम ला पुत्र रुप मा पायके
धन्य धन्य हुयि माय कौशल्या ॥

एक नाम से जग मा सुंदर , बाकी सकल अनाम से
भव तरन को नाम ज्योतिर्मय,जय जय सीताराम से ॥

सीताराम की भयी किरपा जब
जटायु को भाग जग गईन
मृग मारिच ला मिली सतगति
ओको सकल पाप कट गईन ॥

जपो नाम तुम्हीं सीताराम को, येव सबले पावन काम से
भव तरन को नाम ज्योतिर्मय, जय जय सीताराम से ॥

मन मन्दिर साकेत बनाव जी

बसाव जी मूरत सीता राम
जग को तारणहार नाम येव
बन्हें तुम्हरो बिग्ड़्यो काम ॥

सीताराम,भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न, युग -युग को परिणाम से
भव तरन को नाम ज्योतिर्मय,जय- जय सीताराम से ॥

राम जसो रखो शुध्द आचरण
माता सिया जसी मर्यादा
मान बड़्हे तबच कुल को
समाज मा मान मिल्हे जादा ॥

विक्रम,देव ,भोज पूजिन सब , मोरो बारम्बार प्रनाम से
भव तरन को नाम ज्योतिर्मय,जय- जय सीताराम से ॥

रचनाकार- पंकज टेम्भरे 'जुगनू'
बालाघाट,मध्य प्रदेश/7583860227

============

१५.रेनकोट

(पोवारी बालकथा)

रजत सकारपासूनच पप्पाकं मंगं लगेव होतो. "पप्पा, मोला शाळासाठी सॅक, शूज अना रेनकोट अजकं अज लेय देव." "पर गये सालकी स्कूलबॅग अना रेनकोटतं साजरोच से बेटा."

"नही. मोला नवोच पायजे. मोरा दोस्तबी नविन रेनकोट, स्कूल बॅग लेनार सेत?"

"बेटा, रेनकोट नवो जुनो देखस्यान नही वापरी जाय. वू खराब से का साजरो से येवत देखे पायजे." पप्पा समजावनकं सूरमा कवन बस्या.

"मी नही. मोला नवोच पायजे. मोन्यानत् गये ईतवार लेयबी लेयीस."

पप्पाकं बहुत समजावनोपरबी रजत माननला तयार नही रहेलक पप्पा रजतसाती स्कूलबॅग अना रेनकोट खरेदीला तयार भया. ईतवार रहेलक वूनलाबी सुट्टीच होती. पप्पाकं संगं गाडीमा बसस्यान रजत बजारमा गयेव.

बजारमा स्कूलबॅग, रेनकोट, छत्री, वही, पुस्तकंयीनलक दुकान सज्या होता. रंगबिरंगी स्कूलबॅग, रेनकोटपरका कार्टुनका चित्र टुरूपोटुयीनला आकर्षीत करत होता. तसी बजारमा चहलपहल होती. ईतवार रहेलक टुरूपोटुयीनकी शाळाकी खरेदी जोरसोरलक सुरू होती. रजतबी पप्पासंगं ओरखीवालं दुकानमा गयेव. रजतला रेनकोट लेता देख दुकानदारबी कवन बसेव,

"रजत, गयेसालको रेनकोट फाट गयेव का ?"

रजत काहीच न बोलता दुकानदारकं बोलनोकन दूर्लक्ष करत रेनकोट पसंद करन बसेव. घळीभरमा आपलं पसंदको रेनकोट अना स्कूलबॅग लेयकनच वू बाहर आयेव.

मनपसंद खरेदीलक रजत खुस होतो. दुयीजन गाडीमा बस्या अना घरकं रस्ताला लग्या. घरं जाताजाता मम्मीनं भाजीसाती फणस सांगीतीस मुहुन पप्पानं गाडी भाजी बजारमा पलटाईस. भाजी बजारमा एक टुराजवर ताजा ताजा हिरवा फणस होता. पप्पा गाडीमालक उतरस्यान फणस लेन बस्या. रजत गाडीमाच बसेव होतो. अचानक रजतकी नजर फणसवालं टुरापर पळी. फणसवालं टुराकीबी नजर रजतपर पळी. तसो वू टुरा खाल्या मान टाकस्यान आपलो टोंड लुकावत फणस कापन बसेव. फणस लेयस्यान वय निकल्या. गाडीमा बसेव रजत वनं टुराको बिचार करन बसेव. वोला ख्याल आयी. वू फणसवालो टुरा वकंच वर्गमा सिकनेवालो बिट्टू होतो.

दुय रोजमा शाळा सुरू भयी. सब टुरूपोटु रंगीबेरंगी छत्री, रेनको, स्कूलबॅग धरस्यान शाळामा आया. नवो वर्ग, नवो बेंच, नवा वर्गशिक्षक येनं कारनलक वर्गमाको वातावरण फूर्तीवालो होतो. उनारोकं सुट्टिमा गावगवतरला गया टुरूपोटु बातचीत, दंगामस्तीमा दंग होता. रजतबी सोन्या, विजू, गोलूसंगमा उनारोकं गावगवतरकं चर्चामा गुंग होतो. बाहर बरसातको छिळकावबी सुरू होतो. असोमा एकाएक रजतकी नजर बिट्टुपर पळी. अर्धो आंग फिजेव. जूनं छत्रीमालकबी पाणी अंदर आवत होतो. तसो रजत आपलं जागापरलक उठस्यान वोकंजवर गयेव. रजतला देख बिट्टू वोकंकन ख्याल नही रहेसारखो करन बसेव.

"ये बिट्टू, तु काल बजारमा फणस बिकत होतोस ना ?" रजतनं सिधो बिट्टूला बिचारीस. सबकं पुळं बिट्टूला सरमायेसारखो लगेव.

"हव." बिट्टू धिरूलकच बोलेव.

"तू , भाजी बिक्याको टुरा आस ?" रजत चिळावनकं मूडमा खोदखोदस्यान बिचारन बसेव.

"हव. मोरा बाबुजी आमरं खेतमाकी भाजी बिकंसेत. मी बी कबी कबी बसजासू दुकानमा."

"पर काल तु तू दुकानमा नोहतो बसेस ?"

आता रजतला खोदखोदस्यान बिचारता देख बिट्टू परेस्यान भयेव.

"मोला यंदा नवो रेनकोट पायजे होतो. मी पप्पाला सांगेव. तं पप्पानं कहीन, आपलं झाळकी फणस बिक. फणस बिकस्यान रेनकोट लेता आये येतरा पैसा जमाव. मुहून मी च्यार पाच रोज भया फणस बिकुसू." बिट्टूनं एक दममा सांग देयीस.

"मंग लेयेस का रेनकोट ?"

"नही. आबं पूरा पैसा जमनला सेती."

रजत जागापरा जायस्यान बसेव. बसेव बसेव वू बिचारमा पळेव. "मी गयेसालको रेनकोट नवोच रयकेबी नविन रेनकोट लेयेव. अना बिट्टूला एक रेनकोट लेनला बजारमा बसस्यान फणस बिकनो लगं से." वोला बहूत दुख भयेव.

पयलं रोजकी स्याळा सुटेपर रजत घरं आयेव. दफ्तर ठेयस्यान काहीतबी ढूंढन बसेव. रजतला काहीतबी ढुंढता देख मम्मी कवन बसी,

"का ढुंढसेस रजत ?"

"मम्मी, मोरो गयेसालको रेनकोट."

"तोरो नवो रेनकोटत् सेना. मंग जूनो कायला पायजे आता ?" मम्मी बिचारन बसी.

"दे ना मम्मी. काम से एक."

मम्मीला काहीच नही समजेव. वोनं ला ॅफ्टपरलक बॅगमा ठेयेव रेनकोट हेळदेयीस.

दुसरं रोज रजत नवो रेनकोट शाळामा धरस्यान गयेव. शाळामा वू बिट्टूकं आवनकी बाट देखन होतो. बिट्टू शाळामा आयेपर वोनं यंदाको नवो रेनकोट बिट्टूकं सामने धरीस.

"बिट्टू, येव तोला मोरंकनलक नवो रेनकोट. आता तू दुसरो रेनकोट लेवू नोको. फणस बिकस्यान जम्या पैसा तोरं गल्लामा टाक."

"नही, नही. मी रेनकोटसाती पैसा जमा कर रही सेव. अदिक दुय तीन रोजमा मोरा पैसा जम जायेत."

"अरे, दुयच रोज भया लेयीसेव. येकी घडीबी नही मुळीसे. नवोकोरोच से. दोस्तकनलक गिफ्ट त् लेय सिकंसेसना!"

रजतन् बहू आग्रह करीस पर बिट्टूनं रजतको रेनकोट नही धरीस. आखीर रजतकोच नाईलाज भयेव. वोनं बिट्टूसाती आनेव नवो रेनकोट तसोच दफ्तरमा ठेयीस.

उदास चेहरालक रजत घरं आयेव. रातवा वोनं पूरी कहाणी मम्मी पप्पाला सांगिस. तब् वूनला रजतको अभिमान लगेव.

"पप्पाजी, मोरो नवो रेनकोट दुकानदारला वापस करदेव. नही पायजे मोला दुय दुय रेनकोट. मी जुनोच रेनकोट टाकून." रजतन् आपलं मनकी बात पप्पाला सांग देयीस. दुसरं रोज पप्पान् रजतको नवो रेनकोट दुकानदारला वापस करीन.

दुय तीन रोज असाच निकल गया. बिट्टू रोज फाटे छत्रीमा आवत होतो. कबी शर्ट फिजेव त् कबी पॅंट फिजी रव्. पर रजताला काहीच करता नही आयव येको दुख होतो. एकरोज शाळाकं गेटपर रजत रिक्षामालक उतरत होतो. वोतरोमा वोकी नजर शाळामा पैदल आवता टुरूयीनपर पळी. वूनकंमा एक टुरा नवोकोरो रेनकोट टाकेव मज्यामा आवत होतो. वोन् गेटपरच वोला रोकीस त् वू नवो रेनकोटवालो टुरा बिट्टू होतो. रजत बहुत खुश भयेव.

"बिट्टु, कबं लेयेस रेनकोट ?" रजत बिचारन बसेव.

"कालच लेयेव. कसो से मोरो नवो रेनकोट ?"

"बहुत बढिया." असो कवत रजतन् वोको हात आपलं हातमा धरीस अना दुयीजन हासत खिदळात गेट वरांडत शाळामा गया.

लेखक - गुलाब बिसेन,

सितेपार, ता. तिरोडा, जि. गोंदिया 441911

मो. नं. 9404235191

===================================

१६.पोवारी भाषा

पोवारी भाषा येक पुरातन भाषा आय अन(अ) पोवार जिनला छत्तीस कुरया पंवार भी कसेती, की आपरी मातृभाषा(मायबोली) आय। पोवारी भाषा को आपरो स्वतंत्र अस्तित्व आय अन् भाषा को साहित्यिक नाव पोवारी(Powari) से। पोवार समाज को दूसरों पुरातन नाव पंवार होन को कारन पोवारी ला पंवारी(Panwari) भी बोलनमा आवसे। देश मा भाषा इनको अध्ययन प्राचीन काल लक़(अ) होय रही से परा सम्पूर्ण अखंड भारत मा एकजाई भाषाई अध्ययन बीसवीं सदी की शुरुवातमा अंग्रेज अधिकारी गियरसन महोदय को नेतृत्व मा भयो जेमा पोवारी भाषा को विषय मा विस्तृत शोध प्रकाशित भयो होतो। येको पहिले अन् बाद को सप्पाई अध्ययन मा या तथ्य भेटसे की पोवारी भाषा, पोवार समाज की आपरी येक भाषा से अना समाज को क्षेत्रवार विस्थापन का प्रभाव पोवारी भाषा मा दिस जासे।

इतिहास को अनुसार पोवार, मालवा का पुरातन पंवार(प्रमार) क्षत्रिय आती जिनको छत्तीस कुर होतिन अन(अ) इनको बाद मा वैनगंगा क्षेत्र आयकन स्थाई बसाहट भई। पोवारी भाषा, पोवार समाज की संस्कृति को प्रमुख हिस्सा से अन(अ) आता पुरातन पोवार मुख्य रूप लक़ भंडारा, बालाघाट, गोंदिया अना सिवनी ज़िला मा बस्या सेती।

पोवारी भाषा पुरातन से अना येको लगित अध्ययन भी भई से जेको विवरण जनगणना दस्तावेज, जूनो प्रतिवेदन, इतिहास की किताब अना

हमारो समाज का लेखक/विचारक इनको लिख्यो किताब/लेख मा मिल जासे। इनला देखकन यवत् सिद्ध होसे की पोवारी, पुरातन अना समृद्धशाली विरासत की धनी आय। पोवार समाज को बिहया, नेंग-दस्तूर, रोज का काम काज, सन-तिव्हार असो सामाजिक-सांस्कृतिक कार्यक्रम को गीत, पोवारी भाषा मा होवनो यन(अ) बात को प्रमान से की पोवारी भाषा, छत्तीस कुरया पोवार समाज की सांस्कृतिक विरासत ला आपरो मा समाहित कर राखिसे।

कोनी भी समृद्ध भाषा अन(अ) संस्कृति को विकास मा कई सदी लग जासेती। आपरी पोवारी भाषा को साथ मा समाज की संस्कृति को विकास भी असो मोठो कालक्रम मा क्रमबद्ध उन्नत होन को परिचायक आय। पोवारी भाषा मा मालवा-राजपुताना (अज़ को मध्यप्रदेश राजस्थान गुजरात को सीमावर्तीय क्षेत्र) की भाषा इन लक़ साम्यता दिससे। पोवार समाज को पुरातन भाट न् आपरी पोथी मा वैनगंगा क्षेत्र को पोवार इनला मालवा का प्रमार अना उनको नातेदार क्षत्रिय इनको संघ को रूप मा लिखिसेत्।

मालवा मा प्रमार वंश को शासन होतो। प्रमार राजा अन(अ) उनको नातेदार कुल, पोवार/पंवार जाति को कुल आती। मालवा पर(अ) प्रमार वंश को शासन की समाप्ति को बाद पोवार इनको कई क्षेत्र मा विस्थापन भयो। कई पोवार, नवो क्षेत्र मा राजपूत, मराठा अन(अ) कई समाज मा कुल को रूप मा शामिल भय गईन पर(अ) मालवा मा एक जाति को रूप मा पोवार

समाज लम्बो समय तक संग मा रही सेती अना बादमा यव पोवारी कुनबा वैनगंगा क्षेत्रमा आयकन बस गयीन।

अज़ बालाघाट, भंडारा, गोंदिया अना सिवनी ज़िला का पोवार की एक जसी संस्कृति अन(अ) भाषा से। भाषा मा थोड़ो-थोड़ो स्थानीय अंतर चोवसे परा भाषा को मूल स्वरूप येक जसो आय। पोवारी भाषा पर(अ) सिवनी ज़िला मा बघेली को, भंडारा मा मराठी को, गोंदिया क्षेत्र मा झाड़ी बोली मराठी को, बैहर-लाँजी क्षेत्र मा छत्तीसगढ़ी को प्रभाव दिस जासे, पर(अ) थोड़ो मोड़ो बोलन की लय अन स्थानीय शब्द को अंतर को बावजूद पोवारी को मूल स्वरुप अना पुरातन शब्द येक जसा सेती। भाषाई सर्वे मा पोवारी ला हिंदी की उपभाषा को रूप मा लिखी गई से पर(अ) पोवारी की आपरी लय अन(अ) अस्तित्व हिंदी की उत्पत्ति अना विकास लक़(अ) भी जूनी से। विदर्भ मा पोवार समाज को आवन को बाद पोवारी अना स्थानीय मराठी-झाड़ी बोली मिलन लक़(अ) पोवारी भाषा को येक नवो स्वरूप मा विकास भयो।

वैनगंगा क्षेत्र मा आयकन बसनला अज़ लगभग तीन सौ बरस लक़(अ) भी अदिक को बेरा भय गई से अन(अ) सांस्कृतिक रूप मा समाज को आपरो पूर्व क्षेत्र लक़(अ) कोनी भी संबंध नहाय येको लाई वैनगंगा क्षेत्र की पोवारी भाषा आता इतन का पोवार समाज की आपरी भाषा से। भाषाई अध्ययन करता इनना पोवारी(Powari) नाव की भाषा ला बालाघाट, भंडारा(+गोंदिया) अना सिवनी ज़िला मा निवासरत पोवार(३६ कुल पंवार)

समाज की च भाषा लिखी सेत अन(अ) १८६८ अना १८८१ लक़(अ) हर दस बरस मा विधिवत होवन वाली जनगणना मा यव तथ्य मिल जासे।

डॉ. भोलानाथ जी तिवारी को द्वारा रचित किताब, "भाषा विज्ञान कोष" मा या तथ्य उल्लेखित से की पोवारी बोली बालाघाट अना सिवनी जिला मा बोली जासे। १८९१ की जनगणना मा ७०,००० मानुष पोवारी बोलनो वाला होतिन।

अज छत्तीस कुर का पंवार (पोवार) की देश मा जनसंख्या १४ लाख को आसपास से अना अरधी पोवार जनसंख्या पोवारी मा बोल सेती तसच दो तिहाई समाज ला पोवारी उमजसे। यन बात की लगित जरुरत से की समाज को बीच मा आपरी मायबोली को अधिकादिक प्रचार होनो चाहिसे, तब(अ) आपरी मातृभाषा को अस्तित्व बरकरार रहे, नही त आपरो पुरखाइन की यव विरासत मुराय जाहे।

अज़ देश विदेश मा कई संस्था अना विभाग, विलुप्त होय रही बोली भाषा इनको संरक्षन् को कार्य कर रही सेती। पोवारी भाषा भी ओन भाषा इनमा शामिल से जिनला खतम होन को खतरा से। पोवार समाज मा अज़ अनेक सामाजिक कार्यकर्त्ता, साहित्यकार, गीतकार अस(अ) अनेक समाज जन आपरी यन(अ) विरासत ला बचावन मा जुट गया सेती। उनको प्रयास लक़(अ) पोवारी आपरो मूल नाव अना स्वरूप मा जीवित होय रही से या लाई ख़ुशी की बात से।

============

६. पोवारी भाषा में प्रकशित किताबों की सूची

पोवारी भाषा में लोकगीत मौखिक रूप में सामाजिक रीति-रिवाजों में सदियों से गाते आये हैं। लिखित रूप में साहित्य निर्माण हाल के वर्षों में काफी हुआ हैं। आज लगभग पचास साहित्यकार पोवारी भाषा में अनेक विधाओं में लेखन का कार्य कर रहे हैं। पोवारी भाषा में ज्ञात किताबों की सूची निम्नानुसार हैं-

क्र.	किताब	लेखक	वर्ष	साहित्य का प्रकार
1.	गीत गंगा	श्री यादोराव चौधरी	1998	कविता संग्रह
2.	भाऊ आता जागो	एड. श्री मनराज पटले	2001	कविता संग्रह
3.	बिह्या का गाना	श्री यादोराव चौधरी	2002	कविता संग्रह
4.	त् आता करोना आपलो विकास	एड. श्री मनराज पटले	2005	कविता संग्रह
5.	पंवार गाथा	श्री जयपालसिंह पटले	2006	गद्य संग्रह
6.	ग्रामगीता	श्री जयपालसिंह पटले	2009	पोवारी अनुवाद
7.	पोवारी गीतगंगा	श्री जयपालसिंह पटले	2010	कविता संग्रह
8.	गीत रामायण	श्री जयपालसिंह पटले	2012	पोवारी अनुवाद
9.	श्रीमद्भगवद्गीता सार	श्री जयपालसिंह पटले	2014	पोवारी अनुवाद
10.	राजाभोज गीतांजली	श्री जयपालसिंह पटले	2015	कविता संग्रह
11.	गूंज उठे पोवारी	डॉ.ज्ञानेश्वर टेंभरे	2017	कविता-कथासंग्रह
12.	दुर्वांकुर	डॉ.ज्ञानेश्वर टेंभरे	2019	कथा संग्रह
13.	पोवारी मायबोली अमर रहे	श्री. सी.एच.पटले	2019	कविता संग्रह
14.	मन को घाव	एड. देवेंद्र चौधरी	2020	कविता संग्रह
15.	गांव शिवार	श्री हिरालाल बिसेन	2020	कथा संग्रह
16.	पोवारी काव्यजतरा	सौ. छाया सुरेंद्र पारधी	2020	कविता संग्रह
17.	बुलंद करो पोवारी	डॉ.ज्ञानेश्वर टेंभरे	2020	कविता संग्रह

18.	पोवारी साहित्य मंजुषा	एड. लखनसिंह कटरे	2020	सम्मिश्र साहित्य
19.	पेंडी	एड. देवेंद्र चौधरी	2021	कविता संग्रह
20.	पोवारी संस्कृति	श्री ऋषि बिसेन	2021	कविता संग्रह
21.	काव्य मंजिरी	श्री सी.एच.पटले	2021	कविता संग्रह
22.	खोपड़ीमा की दीवारी	श्री गुलाब बिसेन	2021	बालकथा संग्रह
23.	काव्य कुंज	श्री छगनलाल राहंगडाले	2021	कविता संग्रह
24.	पोवारी काव्यधारा	श्री चिरंजीव बिसेन	2021	कविता संग्रह
25.	गुरूगंगा	सौ. फुलवंता बाई चौधरी	2021	कविता संग्रह
26.	पोवारी गौरव	डॉ. शेखराम एडेकर	2021	कविता संग्रह
27.	पोवारी भाषा संवर्धन	श्री ओ. सी. पटले	2022	मौलिक सिद्धांत व व्यवहार
28.	नक्षत्र	श्री यादोराव चौधरी	2022	कविता संग्रह
29.	मोरी बोली जग मा न्यारी	श्री छगनलाल राहंगडाले	2022	कविता संग्रह
30.	भवानी माय की पुकार	श्री रामचरण पटले	2022	कविता संग्रह
31.	थेगरा	एड. देवेंद्र चौधरी	2022	कविता संग्रह
32.	पोवारी काव्यदीप	श्री डी. पी. राहंगडाले	2023	कविता संग्रह
33.	समाजोत्थान का सिद्धांत	श्री ओ. सी. पटले	2023	सैद्धांतिक ग्रन्थ
34.	राजा भोज को राजत्व	श्री ओ. सी. पटले	2023	खंड काव्य
35.	फिपोली	श्री गुलाब बिसेन(संपादन)	2023	बाल कविता संग्रह
36.	देवघर	श्री ऋषि बिसेन	2023	कथा संग्रह
37.	पोवारी हाना	सौ. छाया सुरेंद्र पारधी	2023	कहावतें
38.	नवतरी	श्री गुलाब बिसेन	2023	कथा संग्रह
39.	पोवारी आराधना	डॉ. शेखराम एडेकर	2023	आरती संग्रह
40.	पोवारी धरोहर	श्री ऋषि बिसेन	2023	गद्य संग्रह

पोवारी भाषा का परिचय

ऋषि बिसेन